निर्दलीय

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

- साहित्य
- कला
- संस्कृति
- उद्यमिता

प्रधान संपादक- कैलाश आदमी

उप संपादक: सरिता गर्ग 'सरि'
प्रवासी संपादक: डॉ. सुनीता शर्मा

वर्ष: २० | अंक: ०४ | नई दिल्ली, अक्टूबर २०२५ | मूल्य: १०/- | विशेषांक: ५०/-

पुस्तक संस्कृति विशेषांक

बुद्धि के रास्ते पहले ज्ञान की ओर जाते थे।
कृत्रिम बुद्धि के दौर में रास्ते ही नहीं होते।। - कैलाश आदमी

(आमुख) पृष्ठ ४-७

मासिक 'निर्दलीय' के आगामी अंक

विगत दो दशकों से नियमित प्रकाशित निर्दलीय प्रकाशन की बहुरंगी अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'निर्दलीय' प्रति माह विशेषांक के रूप मे प्रकाशित हो रही है। नई दिल्ली स्थित सलाहकार श्री सुरेश खांडवेकर एवं श्रीमती कविता मल्होत्रा और संरक्षक सेठ रामनिवास गुप्ता एवं श्री रमेश सिंह राघव के सहयोग से मासिक पत्रिका की साज-साज्जा और सामग्री में निरंतर उत्कृष्टता एवं विकास परिलक्षित है। इस तारतम्य में आगामी वर्ष २०२५-२६ के लिए संपादकीय मंडल ने बारह विषयों का चयन किया है । आप सभी से प्रार्थना है कि आप इन विषयों पर अपने आलेख, खट्टे मीठे अनुभव, काव्य, कथा- कहानी,कविता, प्रहसन,संस्मरण अदि मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं। आपसे निवेदन है निम्नलिखित विषयों पर प्रकाशित होने जा रहे निर्दलीय मासिक पत्रिका के विशेषांकों के लिए विषयांतर्गत सामग्री अवश्य भेजें। माहवार विषय इस प्रकार है--

नवंबर- शिक्षा, भाषा और साहित्य तथा दिसंबर - पर्यावरण एवं जलवायु संरक्षण, जनवरी- विश्व शांति, फरवरी - सर्वधर्म समभाव, मार्च- वासंती उल्लास, अप्रैल - फुर्सत, मई -सैर सपाटा, जून-मुखर अभिव्यक्ति, जुलाई- निर्दलीय के अंतरराष्ट्रीय वार्षिक सम्मान समारोह पर केंद्रित, अगस्त - स्वाधीनता और लोकतंत्र, सितंबर - भाषाई सौहार्द, अक्टूबर - पुस्तकें ही जीवन,

माह अक्टूबर २०२५ में प्रकाशित होने जा रहे विशेषांक (पुस्तकें ही जीवन) हेतु रचनाएं/आलेख २० अगस्त २०२५ तक व्हाट्स ऐप/मेल पर मिल जाना चाहिए।

* कैलाश आदमी, संस्थापक संपादक 9424443401/मेल nirdaliyadaily @gmail.com

निर्दलीय से जुड़ना अब आसान

निर्दलीय दैनिक / साप्ताहिक /मासिक (मुद्रित आकार)का शुल्क भेजना अब आसान हो गया है क्योंकि अब आप भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा भोपाल के हमारे निर्दलीय के खाता क्रमांक- 30030303507(IFSC code- sbin0001308 के अलावा हमारे मोबाइल फोन 9424443401 से जुड़े फोन पे या गूगल पे से भी शुल्क /सहयोग राशि भेज सकते हैं। दैनिक,साप्ताहिक व मासिक मुद्रित के साथ ई-पेपर भी हैं। ई-पत्रिका या पेपर हेतु शुल्क भेजना ऐच्छिक है।

मासिक निर्दलीय वार्षिकः रु.600/- साधारण डाक
(स्पीड पोस्ट रु. 1000)
संरक्षक/सलाहकार पद प्रतिष्ठार्थ

वार्षिक : रु।5000/- तीन वर्ष 11000/-
संरक्षक/सलाहकारः रु. 20000/-

नोट- दैनिक निर्दलीय प्रति अंक दो रु. (वार्षिक स्पीड पोस्ट से एक हजार रु), साप्ताहिक 'निर्दलीय' प्रति अंक पांच रु.(वार्षिक शुल्क 500 रु) साधारण डाक व्यय सहित। स्पीड पोस्ट से मंगवाना है तो 1000 रु. । साप्ताहिक व मासिक निर्दलीय दोनों स्पीड पोस्ट से मंगवाना है तो कुल राशि 2000 रु. भेजें।

व्यवस्थापकीय पता -निर्दलीय, एफ 116/7
शिवाजी नगर, भोपाल 462016

खाताधारक का नाम- निर्दलीय Nirdaliya
बैंक-भारतीय स्टेट बैंक
शाखा- मुख्य शाखा, भोपाल 462003
खाता क्र. 30030303507
आईएफएससी कोड (कूट संकेत) -एसबीआईएन 0001308
(sbin 0001308)

दैनिक निर्दलीय, साप्ताहिक निर्दलीय और मासिक निर्दलीय की वार्षिक ग्राहकी/संरक्षक/सलाहकार सहयोग राशि हेतु दूरभाष क्र. 9424443401/8839797448 पर **phone pay/Google pay** के जरिए जमा कर स्क्रीन प्रिंट भेजें।

-प्रबंधक

UPI ID: nirdaliyadaily@okhdfcbank

अंतरंग

स्तंभ	शीर्षक	लेखक/ कवि/समीक्षक	पृष्ठ
आमुख	बुद्धि के रास्ते...	कैलाश आदमी	४-७
आलेख	बहु सांस्कृतिक संवाद	डॉ. सुनीता शर्मा	८
--,,--	समाज की संजीवनी	शगुफ्ता रहमान	९
--,,--	डिजिटल युग में	सरिता गर्ग 'सरि'	१०
--,,--	पुस्तकों में कैद है संस्कृति	शशिकांत गुप्ते	११
--,,--	नई पीढ़ी का सम्मान	रति चौबे	१२
--,,--	विवेकशील संस्कार	बल्लभ किशोर शर्मा	१३
--,,--	अध्ययन की महत्ता	मनोज चतुर्वेदी	१३
--,,--	पुस्तकों में झलकती संस्कृति	चंचलिका शर्मा	१४
--,,--	बिखरी पड़ी है संस्कृति	मंजूषा रमन धाकरे	१४
--,,--	पुस्तक मंजूषा	सविता व्यास	१५-१६
कविता	किताबें	सतीशचंद्र सतीश, संजय तराणेकर	१६
आलेख	संत साहित्य	साधना शुक्ला	१७
कविता	पढ़ लो किताबें	संगीता गुप्ता	१७
आलेख	पुस्तक संस्कृति का क्षरण	डॉ. सीमा अग्रवाल	१८
--,,--	संस्कृति के लिए पुस्तकें	उदय नारायण सिंह	१९
--,,--	भारतीय संस्कृति हमारी विरासत	राजकुमारी चौकसे 'प्रेरणा'	२०-२१
--,,--	समाज में व्याप्त...	सूफिया जैदी	२२
--,,--	शिक्षा, भाषा और संस्कृति	संजीव ठाकुर	२३
--,,--	अनुपम धरोहर	कविता मल्होत्रा	२४
कविता	पुस्तकें ही जीवन	शशि प्रभा शाक्य	२४
आलेख	मानवता की पाठशाला	सुनीता शर्मा 'सिद्धि'	२५-२६
--,,--	पुस्तकों का महत्व	डॉ. शरद नारायण खरे	२६
--,,--	वेदों का सार्थक विवेचन	प्रेमलता भार्गव	२७
--,,--	जीवन का शाश्वत संगीत	यशोधरा भटनागर	२८
कविता	पुस्तक संस्कृति	कृष्णदेव चतुर्वेदी	२८
आलेख	नागरिक बोध	मनोरमा पंत	२९
पुस्तक समीक्षा	गुरु कृपाः बाबा पुणवंतजी	कृष्णदेव चतुर्वेदी	३०
लोकार्पण	जयप्रकाशः परिवर्तन की वैचारिकी	शिवदयाल	३१
कविता	हिंदी भाषा	डॉ. शेषपाल सिंह	३१
आलेख	पुस्तक केवल एक ग्रंथ नहीं	डॉ. सुनीता त्रिपाठी	३२
कविता	शब्द संस्कृति	नीता श्रीवास्तव	३२

मासिक
निर्दलीय

संरक्षक/सलाहकार सुरेन्द्रनाथ दुबे, मेघा पाटकर, डॉ। पवन कुमार जैन, सोहनराज तातेड, सुरेश खांडवेकर, सेठ रामनिवास गुप्ता, कविता मल्होत्रा

कार्यकारी संपादक - प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी) ९८२६४२२८२० *प्रबंध सम्पादक- अशोक 'निर्मल'

मूल्य 10 रुपये/ विशेषांक 50/- वार्षिक 600/- पंजीकृत डाक 1000/- शुल्क फोन पे/जी पे 9424443401 QR CODE द्वारा या निर्दलीय (nirdaliya) के SBI मुख्य शाखा भोपाल खाता क्रमांक 30030303507 (IFSC code sbin0001308)
अथवा निर्दलीय प्रकाशन के यूनियन बैंक (महाराण प्रताप नगर जोन-2 भोपाल) के खाता क्रं। 101211010000060 में जमा कर सकते हैं।
(RNI regnÐ DELHI/2006/19211) ईमेल nirdaliyadaily@gmailÐcom ई पेपर nirdaliyaÐcom
भोपाल कार्यालय/संपर्क: निर्दलीय प्रकाशन-एफ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२०१६ दूरसंपर्क०७५५ -२७७२४०६
स्वामी,मुद्रक-प्रकाशक-संपादक-कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' (9424443401/8839797448) द्वारा निर्दलीस प्रेस,
भोपाल से मुद्रित, राघव भवन सी 6/72 दयालपुर), दिल्ली 110 090 से प्रकाशित।

बुद्धि के रास्ते पहले ज्ञान की ओर जाते थे। कृत्रिम बुद्धि के दौर में रास्ते ही नहीं होते।।

कैलाश आदमी

जो कुछ देखा, सुना अथवा समझा जाता है वह साधारणतया ज्ञान का प्रथम चरण होता है और उसमें परिपक्वता अनुभव में लाने से आती है किंतु ज्ञान कैसे प्राप्त हो यह प्रश्न स्वाभाविक है।

यह भी स्वाभाविक है कि ज्ञान हर मनुष्य को होना चाहिए। ऐसी जीवन शिक्षा मिलना चाहिए जिसमें यह प्राथमिक ज्ञान मिले कि मनुष्य जान पाए कि वह कौन है, क्या है तथा क्यों है और है तो उसे क्या करना चाहिए।

यह सब ज्ञान बाल्यावस्था में ही पालक-अभिभावक देते हैं तथा ज्यों-ज्यों बाल्यपन से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होते हैं गुरुजन उस ज्ञान में समयानुसार और समयानुरूप वृद्धि करते हैं।

मैं स्वयं बाल्यावस्था में जब अपने पैतृक गांव में था तब ना केवल अपने माता-पिता बल्कि दादा-दादी और गांव के बुजुर्गों से ज्ञान प्राप्त करता था जिसमें शाला जाने पर वृद्धि होना स्वाभाविक है। गांव की शासकीय पाठशाला के प्रधान अध्यापक ना केवल मेरी ज्ञानवृद्धि बल्कि सभी छात्र-छात्राओं के ज्ञान में वृद्धि हो इस ओर विशेष ध्यान देते थे। यहां तक की वे छुट्टी व रविवार के दिन ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक छात्रों को अपने घर बुलाकर उन्हें यथोचित शिक्षा देते थे और छात्र उस ज्ञार्नाजन का लाभ उठाते थे। परीक्षा के दिनों में तो हमारी प्राथमिक शाला के प्रधान अध्यापक श्री जय नारायण भार्गव सभी परीक्षार्थियों को अपने घर आमंत्रित करते और हम बिस्तर लेकर वहां पहुंच जाते तथा सायंकाल हमें जो शिक्षा व ज्ञान प्राप्त होता उसका उपयोग परीक्षा में मिलने वाले प्रश्नों का उत्तर देने में करते। उन दिनों छोटी शालाओं में पुस्तकालय नहीं होते थे तथा ट्यूशन की प्रथा भी शुरू नहीं हुई थी। इसलिए कक्षा शिक्षा के बाहर शिक्षण की सुविधा कम ही देखने में आती थी।

वर्तमान काल में पुस्तकालयों की संख्या काफी अधिक हो गई है तथा ट्यूशन वाली वृत्ति का भी तुलनात्मक रूप से बहुताधिक विस्तार हुआ है किंतु गुणात्मक शिक्षा कम ही मिल पाती है।

अधिकांश शिक्षक-शिक्षिकाएं चाहे वे सरकारी विद्यालय के हों अथवा निजी क्षेत्र के, वे कोचिंग पर ज्यादा ध्यान देते हैं। कोचिंग कक्षाओं में भारी भरकम फीस या शुल्क वहन करने में सक्षम परिवारों के छात्र-छात्राएं ही जा पाते हैं। देश में कोटा जैसे कई स्थान कोचिंग के लिए मशहूरियत हासिल कर चुके हैं किंतु जो छात्र असफल हो जाते हैं उनमें निराशा की प्रवृत्ति इतना अधिक दिखाई देती है कि उसे हम आत्महत्या प्रकरणों में सिद्ध पाते हैं। अवसाद और चिंताग्रस्त छात्रों द्वारा आत्महत्या किए जाने के प्रकरण कोटा में सर्वाधिक पाए गए हैं जो राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गए हैं।

जहां तक ज्ञान की उच्चावस्था विज्ञान का प्रश्न है विज्ञान को ज्ञान का ही विलोमन कहा जा सकता है। उस ज्ञान का विलोमन जो आदि व्यवस्था का अंग रहा तथा जिसने उन्नति परक संसाधनों का मानव हित में आविष्कार किया। ऐसे आविष्कार आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर समयानुसार आज भी किए जा रहे हैं और जो छात्र-छात्राएं इसमें स्वयं को पारंगत पाते हैं उसका श्रेय शिक्षकों को ही जाता है।

आज विज्ञान इतनी प्रगति कर चुका है कि नासा और इसरो के वैज्ञानिक ना केवल सूर्य, चंद्र व मंगल ग्रह जैसे बड़े ग्रहों पर मनुष्य को बसाने के लिए प्रयत्नशील है बल्कि अन्य ग्रहों को भी पर्यटन ग्रह बनाने की दिशा में सचेष्ट हैं। सामयिकता के बदलते नए परिवेश में उसके वास्तविक ध्येय का अपभ्रंश कर उसे विनाशक और विध्वंशक बनाए जाने की दिशा में पहला प्रयास प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने हाइड्रोजन बम जापान पर फेंकर किया था जिसे दुनिया के जागरूक लोग भूले नहीं है। भारत जो स्वयं को विश्व गुरु के रूप में प्रचार करने में पीछे नहीं रहता तथा विश्व शांति की दिशा में भी अग्रणी रहने का दावा करता है उसने भी परमाणु शक्ति का परीक्षण कर दुनिया को यह जता दिया कि भारत अब केवल बुद्ध और गांधी की अहिंसा की भूमि नहीं रहा बल्कि यदि उस पर परमाणु हमला किया जाता है तो वह भी हमलावर को छोड़ने वाला नहीं है।

यह सब आत्मरक्षा के नाम पर अथवा आत्मरक्षा की

आड़ में किया जा रहा है और एक समय परमाणु वैज्ञानिकों में मशहूर रहे अब्दुल कलाम जो भारत के राष्ट्रपति भी रह चुके हैं ने भी अपने छात्र जीवन में ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेकर ज्ञान के चरमोत्कर्ष तक पहुंचे और अपने छात्र जीवन में पुस्तकालयीन सुविधा का भी अधिकतम लाभ उठाया। वे स्वयं महाविज्ञानी थे किंतु इस तथ्य को स्वीकार करते हुए यह चिंता व्यक्त करते थे कि विज्ञान अतिविज्ञान की दिशा में बढ़ रहा है। भारत के महर्षि अरविंद तो इसके भी पहले कह चुके थे कि अतिविज्ञानियों की उपलब्धि जताने वाले आधुनिक विज्ञानी किसी अनिश्चित दिशा में केवल आगे बढ़ते जाने का मार्ग बताते रहे और आपातकालिक क्षणों में पीछे हटने या किन्ही विपरीत परिस्थितियों में बच निकलने का कोई शांतिपूर्ण या अहिंसक मार्ग उन्हें दिखता नहीं है किंतु दुनिया में प्रतिक्षण आविष्कार पर आविष्कार किए जा रहे हैं जिससे स्पष्ट है कि शांतिपरक विज्ञान का विलोपन हो चुका है और इससे तृतीय विश्वयुद्ध का खतरा सिर पर मंडरा रहा है। मैं स्वयं पुडुचेरी स्थित अरविंद आश्रम में गया तो वहां पुस्तकालय जाने का अवसर मिला जो पुस्तक संख्या की दृष्टि से देश के समृद्ध पुस्तकालयों में गिना जाता है। इससे स्पष्ट है कि भारत पुस्तक संस्कृति की दृष्टि से संपन्न रहा है।

भारत की नई शिक्षा नीति में विज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया गया किंतु शिक्षा में गैर बराबरी और असमानता की स्थिति होने से स्पष्ट है कि केवल अमीरों के बच्चों की शिक्षा की ओर ही ज्यादा ध्यान दिया गया है। ऐसी शिक्षा दिए जाने की ओर शिक्षा नीति केंद्रित है जिसमें बच्चे अध्ययन कर विदेश जा सकें और फिर वहीं बस जाएं। अमेरिका व कनाड़ा जैसे देशों में भारत से गए छात्रों की स्थिति इतनी अधिक हो गई कि वहां सरकारें अब अध्ययन के बाद छात्रों को वहां की नागरिकता देने के लिए तैयार नहीं हैं और ना ही वहां रोजगार देने के लिए तैयार हैं। यद्यपि विदेशी वीजा पाने के इच्छुक छात्र-छात्राओं की संख्या में निरंतर वृद्धि होती जा रही है किंतु हम यह भूल रहे हैं कि जिस सनातन और पुरातन संस्कृति के अनुकूल जिस शिक्षा का वादा करते हुए हम विश्व गुरु होने का दंभ भरते हैं वह दूर-दूर नहीं दिखाई देती।

मैंने ज्ञान/शिक्षा प्राप्ति हेतु अपनी खिड़कियां सदैव खुली रखी हैं। मेरी बार-बार इच्छा होती है कि अपने शिक्षकों या गुरुओं अथवा आचार्यों को पत्र लिखकर उनके प्रति आभार जताऊं किंतु स्थिति यह है कि उनमें से एक भी जीवित नहीं है। अस्तु मैं उनके प्रति कृतज्ञता व आभार व्यक्त कर अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहा हूं। वर्तमान समय में किताबों का रंग-रूप और स्वरूप बदलता जा रहा है। आभासी दुनिया की ओर निरंतर अग्रसर व्यक्ति बदले हुए स्वरूप से खुश नजर आता है किंतु पुरानी पीढ़ी जो किताबों से जुड़ी रही आज भी उनका लगाव किताबों के प्रति बना हुआ है।

एक समय था जब बुद्धि के रास्ते हम ज्ञान प्राप्ति की दिशा में जाते थे और किताबों एवं गुरुओं का सहारा लेते थे किंतु जेन-जी कही जाने वाली बाल-किशोर पीढ़ी के साथ युवा पीढ़ी किताबों से विमुख होती जा रही है। उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के लिए अपने कक्षा अध्यापकों के साथ गुगल गुरु को अधिक आदर देना आरंभ कर दिया है क्योंकि गुगल गुरु उनके प्रश्नों का तुरंत जवाब देता है। यही नहीं जिन्हें ना शब्दों की पकड़ है और ना भाषा की समझ, वे भी गुगल गुरु का सहारा लेकर ना केवल अपनी कक्षाओं बल्कि घर और समाज में भी अपना अलग स्थान बनाने में सफल हो रहे हैं तथा परीक्षाओं और विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं स्पर्धाओं में भी सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

वह समय गया जब हर पीढ़ी के लोग पुस्तकों को जीवन की नींव या बुनियाद के रूप में स्थान देते थे। कोई व्यक्ति क्या, क्यों और कैसे लिखे? इस हेतु ज्ञान गुरुओं के साथ ही किताबों को महत्व देते थे। वैकल्पिक लेखन कही जाने वाली नई विधा जिसमें समाज माध्यमों का प्रभुत्व है, ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। पत्र-पत्रिकाओं में जो नए लेखक उभर कर सामने आ रहे हैं वे अनुभव की दृष्टि से भले ही पीछे हों, लेकिन जीवन जीने की ललक ने उन्हें एक स्वतंत्र लेखक के रूप में उभरने और उसके माध्यम से जीवन निर्वाह की ललक पैदा की है। उनकी शब्दावली और भाषा बताती है कि हम किस तरह के समाज में जी रहे हैं।

जब व्यक्ति एकांत में होता है अर्थात भीड़ से अलग होकर सोचता है तब उसका अंता:करण काम करता है। ऐसे समय वह जीवन को गहराई से समझने का प्रयास करता है। इस अवधि में वह ना केवल खुद का आंकलन करता है बल्कि अंतर्निहित ऊर्जा के विकास और विस्तार पर संजीदगी से विचार करता हुआ खुद की भावी दिशा तय करता है। इस तरह व्यक्ति की खुद की कल्पनाशीलता और विचार शक्ति बढ़ती है। ऐसे समय व्यक्ति आत्मानवेशी होकर स्वाध्याय की दिशा में कदम बढ़ाता है। एक समय था जब पुस्तकालयों में रखी

किताबें विचारवान व्यक्ति और लेखक के लिए सहायक होती थी। जो लोग सक्षम हैं वे आवश्कता अनुसार किताबें खरीद कर उन्हें घर पर रखना पसंद करते रहे। इस तरह उनका गृह पुस्तकालय ना केवल उनके काम आता बल्कि आगे आने वाली पीढ़ी और मित्रों के लिए भी सहायक होता था।

मेरा स्वयं का अनुभव यह है कि जब मैं अपने गांव के समीपस्थ शासकीय माध्यमिक शाला में पढ़ता था तब पहली बार पुस्तकालय से रूबरू हुआ। पुस्तकालय के साथ वाचनालय भी हुआ करता था किंतु वाचनालय में जिला मुख्यालय गुना से एक ही अखबार आता था और उसका भी डाक संस्करण होता था अर्थात कल का अखबार आज पढ़ने मिलता था। पुस्तकालय में भी बमुश्किल हजार पुस्तकें रहती थीं तथा अधिकांश पाठ्यपुस्तकों का ही हिस्सा होती थी किंतु जब मैंने आगे की पढ़ाई हेतु अशोक नगर तहसील मुख्यालय स्थित इंटरमीडिएट महाविद्यालय में दाखिला लिया तो वहां बहुत बड़ा पुस्तकालय में जाकर विविध विषयों की पुस्तकों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इनमें पाठ्येत्तर पुस्तकों की संख्या हजारों में रहती थी। पुस्तकालय से मनचाही पुस्तकें घर ले जाने की सुविधा भी मिली हुई थी किंतु दो से अधिक पुस्तकें नहीं ले जा सकते थे। जब मैंने चार वर्ष बाद गुना स्थित शासकीय महाविद्यालय में उच्च अध्ययन हेतु दाखिला लिया तो वहां मैंने पाया कि अशोक नगर की तुलना में गुना महाविद्यालय का पुस्तकालय ज्यादा समृद्ध और संपन्न है। यही नहीं वहां नगर पालिका और आर्य समाज के पुस्तकालय भी थे तथा जो पुस्तकें हमें महाविद्यालय में पढ़ने हेतु उपलब्ध नहीं हो पाती थीं ऐसी पुस्तकें भी इन पुस्तकालयों में मिल जाती थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि चाहे बाल किशोर हो या युवा अथवा प्रौढ़ सभी में ज्ञान पिपासा विद्यमान रहती है और इस पिपासा को शांत करने में पुस्तकें सहायक होती हैं।

यद्यपि आज पुस्तक संस्कृति का निरंतर क्षरण होता जा रहा है फिर भी ज्ञान पिपासा बनी हुई है। जिनके लिए साहित्य, संस्कृति व ज्ञान जीवन में सर्वोपरि रहा है वे ज्ञार्नाजन के साथ ही शोध कार्य को भी सर्वोपरि स्थान देते हैं। इस क्षेत्र में किस देश ने कितनी प्रगति की है इसका आंकलन वे यह देखकर करते हैं कि वहां कितने लेखक हैं। इस हेतु वे यह भी देखते हैं कि वहां कितने पुस्तकालय हैं। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय तो हैं ही अन्य संस्थागत पुस्तकालयों की भी भरमार है किंतु जब से गुगल एवं कृत्रिम मेधा का प्रचलन बढ़ा है तब से पुस्तकालयों के प्रति रूझान घटता गया है। पहले जहां पुस्तकालयों एवं पुस्तकों की संख्या तथा वहां जाने वाले पाठकों की संख्या देखकर नगर और क्षेत्र की बुद्धिमत्ता और ज्ञान पिपासा का आंकलन किया जाता था किंतु अब यह देखा जाने लगा है कि छात्रों और नागरिकों में समाज माध्यमों के प्रति कितनी समझ है और वे इन माध्यमों का कितना उपयोग करते हैं। यह सच्चाई है कि वर्तमान भौतिकवादी युग में यह देखा जाने लगा है कि लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का कितना उपयोग कर रहे हैं। इससे विकास की परिभाषा ही बदल गई है। भारत वर्ष में एक समय शिक्षा संस्थान के रूप में केवल गुरुकुल का ही स्थान था किंतु समय के साथ परिवर्तन होता गया और गुरुकुलों का स्थान भारतीय शिक्षा पद्धति में कम होता चला गया। खासकर ब्रिटिश शासन के दौरान ऐसी शिक्षा पद्धति विकसित की गई जिसमें शासकों को उनके मनोनुकूल सेवक मिल सकें। इस दृष्टि से कॉन्वेंट-कैंब्रिज शिक्षा पद्धति को बढ़ावा दिया गया जिसमें हिंदी, संस्कृत और भारतीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी को सर्वोच्चता मिली। इससे ब्रिटिश शासकों के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस), भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) और भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) जैसे कैडरों के लिए सेवक जुटाना आसान हो गया।

स्वाधीनता के बाद उम्मीद थी कि भारतीय शिक्षा पद्धति में अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को बढ़ावा मिलेगा किंतु यह खेद की बात है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को भारतीय भाषाओं से जोड़ने की बजाए शालेय शिक्षा से लेकर महाविद्यालयीन शिक्षा और विश्वविद्यालयीन शिक्षा तक अंग्रेजी को महत्व दिया गया और आज भी दिया जा रहा है।

कहने को नई शिक्षा नीति के अंतर्गत त्रिभाषा फॉर्मूला अपनाए जाने की बात कही गई है किंतु व्यवहार में यह देखा जा रहा है कि महाराष्ट्र जैसे राज्य में जहां पर पहले शुरुआती शिक्षा मराठी के साथ हिंदी में दी जाती थी अब नया कानून बनाते हुए वहां मराठी और अंग्रेजी को प्राथमिकता दी जा रही है। दक्षिण भारत के राज्यों में तमिल, कन्नड़, तेलगु और मलयालम भाषाओं के साथ अंग्रेजी भाषा पढ़ाया जाना अनिवार्य है और इस कारण वहां संविधान में दर्ज राजभाषा हिंदी को दरकिनार किया जा रहा है जो भारतीय भाषाओं के विकास की दृष्टि से चिंतनीय है। तमिलनाडु सरकार ने तो हिंदी के बहिष्कार

की नीति ही अपना रखी है। वहां शासकीय विद्यालयों में केवल अंग्रेजी और तमिल भाषा ही पढ़ाई जा रही है। इसके विपरीत पूर्वांचल के राज्यों में अंग्रेजी के साथ मातृभाषा और हिंदी में भी पढ़ाई की सुविधा उपलब्ध है।

भाषा कोई भी हो उसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है अर्थात अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम है भाषा। भाषा मनुष्य के मन की तहों को भी खोलती है। मैं आरंभ से ही भारतीय भाषाओं के लचीलेपन के प्रति उदार नहीं रहा। अनुदार प्रवृति विदेशी भाषा अंग्रेजी के चलन को लेकर निर्मित हुई और जब मैंने देखा कि हिंदी साहित्य सभी भारतीय भाषाओं का विदेशी भाषा के प्रति लचीलापन है तो यह स्थिति मुझे अखरती गई। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान आंदोलनकारियों ने मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा की दृष्टि से जो रवैया अपनाया उसे दृष्टिगत रखते हुए देश के संविधान में यह व्यवस्था की गई कि भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के अनुरूप हिंदी ही देश के राजकाज की भाषा होगी किंतु वर्ष १९६५ तक हिंदी को राजकाज की भाषा की दृष्टि से समृद्ध बनाए जाने तक अंग्रेजी देश की राजभाषा होगी और हिंदी सहभाषा। संविधान में यह स्पष्ट प्रावधान किया गया कि भारतीय संविधान लागू होने के १५ वर्ष बाद अर्थात १९६५ में हिंदी ही देश की राजभाषा होगी किंतु १९६५ आने के पूर्व ही तत्कालीन मद्रास राज्य के कट्टरपंथी तमिल भाषियों ने हिंदी विरोधी आंदोलन छेड़ दिया जो हिंसक होता गया। इसके प्रतिकार स्वरूप देशभर में हिंदी के समर्थन तथा अंग्रेजी के विरोध में आंदोलन हुए किंतु तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी तमिल कट्टरपंथियों के दबाव में आ गईं और संविधान में संशोधन कर हिंदी को देश की इकलौती राजभाषा बनने से रोक दिया गया। संशोधन में कहा गया कि जब तक देश का कोई राज्य अंग्रेजी को प्रादेशिक भाषा में स्थान देता रहेगा तब तक हिंदी अंग्रेजी का स्थान नहीं ले सकेगी।

स्पष्ट है कि देश के सभी राज्यों में बोली और समझी जाने वाली हिंदी भाषा के साथ पक्षपात किया गया जबकि इसे नागरिकों द्वारा राष्ट्रभाषा का दर्जा पहले ही दिया जा चुका है किंतु राजभाषा बनने में अंग्रेजी आड़े आती रही है। केंद्रीय कर्मचारी चयन आयोग में आवेदकों के लिए अंग्रेजी जानने की शर्त रखी गई है जिसके कारण हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के जानने वाले अभ्यर्थियों के समक्ष रोजगार का संकट बना हुआ है। इस स्थिति के विरूद्ध आयोग के समक्ष कई बार आंदोलन किए जा चुके हैं किंतु आज तक देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली एवं उपयोग में लाई जाने वाली हिंदी भाषा के साथ ही मातृभाषाओं के साथ भेदभाव किया जा रहा है जिसके फलस्वरूप ना केवल केंद्रीय सेवाओं में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में निपुण अभ्यर्थी प्रवेश कर पाते हैं बल्कि अखिल भारतीय सेवाओं यथा भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, भारतीय वन सेवा और भारतीय विदेश सेवा जैसी सेवाओं में उन्हें प्रवेश नहीं मिल पाता। अखिल भारतीय सेवाओं के ये अधिकारी देश या विदेश जहां भी पदस्थ होते हैं उन्हें अंग्रेजी भाषा के ज्ञान का अहंकार घेरे रहता है जिससे भारतीय भाषाओं के लोग प्रताड़ित होते हैं। जानबूझकर इस तरह के प्रयास किए जा रहे हैं जिससे अंग्रेजी सदा सर्वदा के लिए देशवासियों पर थोपी जाती रहे। अटल बिहारी वाजपेयी के शासनकाल में हिंदी भाषा के स्वरूप को ही विकृत किए जाने की दिशा में कदम उठाते हुए हिंदी शब्दों के साथ हिंदी के अंकों का उपयोग गैर कानूनी करार देने हेतु बाकायदा संविधान में संशोधन कर दिया गया जिसके परिणामस्वरूप हिंदी खिचड़ी भाषा के रूप में परिवर्तित होती गई तथा समाचार पत्र-पत्रिकाओं और संवाद माध्यमों ने उसके इस स्वरूप को और भी विकृत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। देश के सर्वाधिक प्रचलित और प्रसारित होने का दावा करने वाले अखबार भी एक भी ऐसा समाचार नहीं देते जिसमें हिंदी के साथ अंग्रेजी के शब्दों और अक्षरों का उपयोग ना किया जाता हो जिससे हिंदी को हिंग्लिश कहा जाने लगा है। समाचार चैनल भी हिंग्लिश का ही उपयोग कर भाषा की विकृति को बढ़ावा देते हैं।

कहने को देश में महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जा चुकी है तथा अभा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और उसकी राज्य इकाइयां हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित हैं किंतु इनमें भी हिंदी शब्दों के साथ अंग्रेजी भाषा के अंकों का उपयोग किया जाता है तथा हिंदी को खिचड़ी भाषा और हिंग्लिश बनाने में ये संस्थाएं भी कोई कसर बाकी नहीं छोड़ती। भारत सरकार गाहेबगाहे देश-विदेश में विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित करती है तथा ऐसा सम्मेलन भोपाल में भी आयोजित किया जा चुका है। भोपाल सम्मेलन के दौरान जो प्रचार पट केंद्र व राज्य सरकार की ओर से लगाए गए उनमें हिंदी शब्दों के साथ हिंदी के अंकों का भी उपयोग किया गया था किंतु यह दिखावा ही सिद्ध हुआ। भारतीय भाषाओं की उपेक्षा के साथ ही पुस्तकों के प्रति घटता रूझान भारतीय संस्कृति व सभ्यता के सर्वथा विपरीत की कहा जाएगा।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

बुद्धि के रास्ते पहले ज्ञान की ओर जाते थे।
कृत्रिम बुद्धि के दौर में रास्ते ही नहीं होते।।

संस्कृति : जड़, आत्मा और बहुसांस्कृतिक संवाद

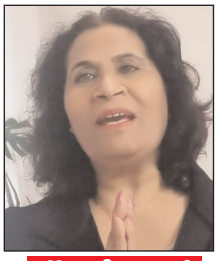

डॉ. सुनीता शर्मा

संस्कृति केवल परंपरा या त्योहारों का संग्रह नहीं है; यह हमारी आत्मा, हमारे आचरण और व्यवहार का प्रतिबिंब है। यह वह प्रकाश है जो भीतर जलता है और हर कार्य, हर शब्द और हर मुस्कान में झलकता है। संस्कृति हमें यह सिखाती है कि हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं और किस दिशा में बढ़ रहे हैं।

जड़ों की गंध: दिल्ली और गांव- दिल्ली, जहाँ मेरा जन्म हुआ, और उत्तर प्रदेश का मेरा गांव, जहाँ मेरा बचपन बीता, दोनों ही मेरे व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण रहे। गांव का सरलपन, मिट्टी की खुशबू, त्योहारों की सहजता और लोकगीतों की मिठास, वहीं दिल्ली की आधुनिकता, विश्वविद्यालयों का वातावरण और बहुराष्ट्रीय माहौल — इन दोनों के मेल ने मुझे एक ऐसा दृष्टिकोण दिया जो आधुनिकता और संस्कृति का संगम है।

मिट्टी की खुशबू, पगों में बसी,
हर रेत, हर पत्ता, हर नदी कहानी कहती।
बचपन की गलियाँ, त्योहारों की धूम,
जहाँ धूपछाँव में बचपन मुस्कुराता।

न्यूज़ीलैंड: संस्कृति का नया घर- न्यूज़ीलैंड में मेरी हिंदी और भारतीय संस्कृति ने एक नई चेतना ली। मैंने इसे न केवल जिया, बल्कि प्रवासी बच्चों और परिवारों को उनसे जोड़ने का प्रयास किया। माओरी रीति-रिवाज टीका (सम्मान और शुभकामना) और टिकंगा (परंपरा और विश्वास) मेरे जीवन का हिस्सा बन गए। हिंदी दिवस, दीपावली, गणतंत्र दिवस और होली के माध्यम से मैंने भारतीय, कीवी और माओरी बच्चों को एक मंच पर लाकर संस्कृति का संगम प्रस्तुत किया-

संस्कारों की वह नर्म डोर, जो हर कदम में हमें संवारती।
भले दूर देश हो, शहर का शोर हो,
मन की गहराई में वही पुकार आती–
मूल को मत भूलो, जड़ों को मत छोड़ो।

कहानियों का संगम- माओरी लोककथा मोई ने सूरज को कैसे धीमा किया÷ में मोई और उसके भाई सूर्य की गति को नियंत्रित कर दिन लंबा करने का प्रयास करते हैं। बच्चों ने इसे भारतीय कथाओं के बाल-हनुमान के सूर्य प्रसंग से जोड़ा-

जहाँ बहुरंगी फूल खिले हों, वही सिखाता है संयम और सौंदर्य।
जहाँ संस्कारों का दीप जलता हो,
वही रोशन करता है हमारी आत्मा का मार्ग.. !

माओरी और भारतीय संस्कृति की समानता- विश्व की विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों में अनेक भिन्नताएँ होते हुए भी कुछ बुनियादी मान्यताएँ एक-दूसरे से मिलती-जुलती प्रतीत होती हैं। माओरी और भारतीय संस्कृति इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। दोनों ही संस्कृतियाँ अपने जीवन दर्शन, परंपराओं और मूल्यों में ऐसी समानताएँ रखती हैं, जो मानव समाज को गहरे स्तर पर जोड़ती हैं।

माओरी संस्कृति में **Papatuanuku** (माँ धरती) और **Ranginui** (आकाश पिता) को सृष्टि का आधार माना गया है, वहीं भारतीय संस्कृति में पृथ्वी माता और आकाश देव का उल्लेख प्राचीन शास्त्रों में मिलता है। यह दर्शाता है कि दोनों ही परंपराएँ प्रकृति को केवल संसाधन न मानकर जीवित और पूज्य सत्ता मानती हैं।

माओरी समाज में **Whanau** (परिवार) और **Iwi** (जनजाति) की अवधारणा भारतीय संस्कृति के संयुक्त परिवार और गोत्र परंपरा से अत्यधिक मेल खाती है। दोनों संस्कृतियाँ व्यक्ति से अधिक सामूहिकता, आपसी सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व को महत्व देती हैं। पूर्वजों का सम्मान भी दोनों में समान है। माओरी अपने **Tipuna** (पूर्वजों) को आज भी अपने जीवन का हिस्सा मानते हैं। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में पितृ-तर्पण और श्राद्ध जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रकट की जाती है।

भाषा और मौखिक परंपरा की बात करें तो माओरी संस्कृति में **waiata** (गीत) और **korero purakau** (कथाएँ) पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान का संवहन करती रही हैं। भारतीय संस्कृति में भी कथावाचन, लोकगीत, श्रुति परंपरा इसी प्रकार ज्ञान और मूल्य संचार का माध्यम रही है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी दोनों संस्कृतियाँ आत्मा की उपस्थिति को स्वीकार करती हैं। माओरी विश्वास करते हैं कि हर जीव, नदी और पर्वत में **wairua** (आत्मा) का वास होता है, वहीं भारतीय संस्कृति में आत्मा-परमात्मा की अवधारणा प्रत्येक प्राणी और वस्तु को पवित्र मानती है। कला और नृत्य भी समान सूत्र पिरोते हैं। माओरी **Haka** और **Carving** के माध्यम से अपनी शक्ति, परंपरा और गौरव को अभिव्यक्त करते हैं। भारत में शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य और मूर्तिकला संस्कृति और शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं। अंततः कहा जा सकता है कि माओरी और भारतीय संस्कृति, भौगोलिक दूरी के बावजूद, जीवन दृष्टि और मूल्यों में गहन समानता रखती हैं। दोनों ही परंपराएँ हमें सिखाती हैं कि मनुष्य का सच्चा विकास तभी संभव है जब वह प्रकृति का सम्मान करे, परिवार और समाज को प्राथमिकता दे, पूर्वजों को याद रखे और आध्यात्मिकता को जीवन का आधार बनाएं।

संस्कार और बहुसांस्कृतिकता- अपनी संस्कृति का सम्मान करना केवल व्यक्तिगत गौरव नहीं, बल्कि दूसरों की संस्कृतियों का भी आदर सिखाता है। अपने आचरण, संस्कार और व्यवहार से हम दूसरों को प्रभावित करते हैं। यही बहुसांस्कृतिक संवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की शक्ति है-

जहाँ बहुरंगी संस्कृति मिलती है, वहीं सच्चा संवाद जन्म लेता है।
विविधता में एकता की वह डोर, जो हमें जोड़ती है, आगे बढ़ाती है।

ऑस्ट्रेलिया: साझा मंच और नई शुरुआत- अब ऑस्ट्रेलिया में मैं नेटिव समुदाय, भारतीय प्रवासियों और स्थानीय युवाओं के साथ भाषा, कला, संगीत और संस्कृति के माध्यम से साझा मंच बनाने का प्रयास कर रही हूँ। यह मंच विविधता में एकता का प्रतीक बनेगा। संस्कार और संस्कृति हमारी नींव हैं—

इन्हें जीओ, साझा करो और दुनिया को जोड़ो।

-मेल्बोर्न/ ऑस्ट्रेलिया

समाज की संजीवनी पुस्तक संस्कृति

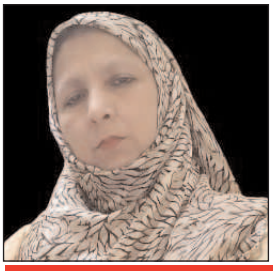

शगुफ्ता रहमान 'सोना'

मनुष्य के जीवन में ज्ञान का महत्व अनादिकाल से रहा है। ज्ञान की यह धारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी जिन माध्यमों से प्रवाहित होती रही है, वह है मौखिक एवं लिखित।

मौखिक रूप से कहीं गयी अपनी भावनाएं अधिक समय तक मानस पटल पर अंकित नही रहती। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचते - पहुंचते अपना मूल अस्तित्व खो देती है। पुराने समय में कहानी, कविता,छन्द गेय पद्धति के माध्यम से अपनी बात, भावनाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचायी जाती थी। धीरे-धीरे मनुष्य को अपनी संस्कृति, साहित्य,शोध आदि का दस्तावेजीकरण करना आवश्यक हो गया, जिससे इसकी मूल भावना प्रभावित होने से बचाया जा सके। बौद्धिक व्यक्तियों द्वारा लिखित दस्तावेजीकरण करना प्रारंभ किया गया और यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्यों का त्यों हस्तांतरित होने लगा। जिसे पुस्तक के रूप में सहेजा जाने लगा। पुस्तक न केवल ज्ञान का भंडार है, बल्कि यह संस्कृति, सभ्यता और परंपरा की वाहक भी है। इसी कारण इसे मानव जीवन की अनमोल धरोहर कहा गया है।

पुस्तक की संस्कृति से आशय उस परंपरा, आदत और जीवनशैली से है जिसमें पुस्तकें केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन ही नहीं, बल्कि समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास का आधार मानी जाती हैं। पुस्तकों का पठन-पाठन, संग्रहण, प्रकाशन और संरक्षण जीवन का अनिवार्य अंग बन जाता है। जब कोई समाज अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक धरोहर को पुस्तकों के माध्यम से जीवित रखता है और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाता है, तब उसे पुस्तक संस्कृति कहा जा सकता है।

बच्चों में पुस्तक संस्कृति को सुरक्षित रखने की आदत विकसित करने के लिए समाज में हर आयु-वर्ग के लोगों को पुस्तकें पढ़ने को महत्व देना चाहिए। इससे व्यक्ति को पुस्तकें केवल जानकारी ही नहीं देतीं, बल्कि सभ्यता, इतिहास, साहित्य और विज्ञान का दस्तावेज़ बनकर अगली पीढ़ियों तक पहुँचाती हैं। अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखती हैं। पुस्तकें जीवन के मूल्यों को संवारने का काम करती हैं। इनसे पढ़ने-लिखने के माध्यम से नए विचार, बहस और शोध को बढ़ावा मिलता है। साहित्य और धार्मिक-आध्यात्मिक पुस्तकें समाज को नैतिकता और जीवन-दर्शन से जोड़ती हैं। अर्थात जब किसी समाज में पुस्तकें केवल पढ़ाई तक सीमित न रहकर दैनिक जीवन और सामाजिक परंपरा का हिस्सा बन जाती हैं, तो उसे ही पुस्तक संस्कृति कहा जाता है।

भारत में पुस्तक संस्कृति का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत जैसी अमर कृतियाँ हमारी प्राचीन पुस्तक संस्कृति की मिसाल हैं। ताड़पत्रों, भोजपत्रों और पांडुलिपियों से होते हुए यह संस्कृति छपाई कला तक पहुँची। गुटेनबर्ग द्वारा छपाई मशीन के आविष्कार ने पुस्तक संस्कृति को नया आयाम दिया। भारत में मुद्रणालयों के आगमन से साहित्यिक और धार्मिक ग्रंथ जन-जन तक पहुँचे।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पुस्तक संस्कृति का महत्व- पुस्तक ज्ञान का संरक्षण कर स्थाई रूप प्रदान करती है। पुस्तकों के माध्यम से ही प्राचीन संस्कृति आज हमारे मध्य लोककथाएं, रीति-रिवाज, आदि पुस्तकों के माध्यम से हमारे बीच में प्रचलित है। पुस्तकें ज्ञान को स्थायी रूप से सुरक्षित रखती हैं। पुस्तकों का अध्ययन व्यक्ति को विचारशील, संवेदनशील और सृजनशील बनाता है।

पुस्तकों ने स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर सामाजिक सुधारों तक में जनजागरण का कार्य किया। मनुष्य के व्यक्तित्व, जीवन शैली में सुधार हुआ।

वर्तमान परिदृश्य आज डिजिटल युग में ई-बुक्स, ऑडियोबुक्स और ऑनलाइन लाइब्रेरियों का चलन बढ़ रहा है। एक ओर यह सुविधा है कि पुस्तकें हर समय उपलब्ध हैं, वहीं दूसरी ओर छपी हुई पुस्तकों के प्रति आकर्षण और पठन आदत में कमी भी देखी जा रही है। इसके बावजूद अब भी पुस्तक मेलों, पुस्तकालयों और साहित्यिक आयोजनों की लोकप्रियता बताती है कि पुस्तक संस्कृति आज भी जीवित है।

वर्तमान परिदृश्य में पुस्तक संस्कृत को जीवित रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है के लिए हमें अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए उपाय करने होंगे। जैसे बच्चों में पठन-पाठन की कमी को देखते हुए पुस्तकों के प्रति आकर्षण करना होगा।

अच्छी पुस्तकों का चुनाव करने में सहयोग देना होगा। मोबाइल और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए पढ़ने की आदत विकसित करनी होगी। रुचि के अनुरूप पुस्तकें उपलब्ध करानी होगी। परिवार और विद्यालय स्तर पर बच्चों में पढ़ने की आदत डालना, पुस्तकालयों को आधुनिक और आकर्षक बनाना, पुस्तक मेलों और पठन अभियानों को प्रोत्साहित करना।

पुस्तक संस्कृति केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं है, बल्कि यह हमारी सभ्यता की आत्मा है। जो समाज पुस्तक संस्कृति को समृद्ध करता है, वही समाज विचारों और मूल्यों में प्रगतिशील बनता है। डिजिटल युग की चुनौतियों के बावजूद यदि हम पुस्तकों के प्रति अपना जुड़ाव बनाए रखें, तो हमारी सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित और उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होगी।

-ऊधमसिंहनगर, उत्तराखंड

डिजिटल युग में आज लोग पुस्तकों की दुनिया से बहुत दूर जा चुके हैं

सरिता गर्ग 'सरि'

डिजिटल युग में लोग पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं। भारत में भी जिस दिन नेट नहीं चलता लोगों की चिंता बढ़ जाती है। रात -रात भर करवटें बदलने लगते हैं। डॉटा लगातार महंगा हो रहा है, लेकिन मोबाइल हाथ से नहीं छूटता। यह कथन है श्रीमती सरिता गर्ग 'सरि' का जो उन्होंने निर्दलीय से जुड़े पत्रकार नरेंद्र गौड़ से साक्षात्कार के दौरान व्यक्त किया।

श्रीमती सरि जो निर्दलीय प्रकाशन में मानद सह संपादक हैं, ने कहा कि आज के इस डिजिटल युग में लोग किताबों से दूर होते जा रहे हैं और मोबाइल लैपटाप की दुनिया में गुमशुदा हैं। मोबाइल ने इंसान को एकाकी बना दिया है। वहीं आपसी सम्बंधों की मर्यादा टूट रही है। आज की पीढ़ी किताबों से दूर हो चुकी है। जिसे देखों वही मोबाइल की तरफ झुका नजर आता है।

श्रीमती सरि का कहना है कि आज खेल के मैदानों में मॉल या फिर बहुमंजिला इमारतें बन चुकी हैं और कुछ एक मैदान हैं भी तो वहां बच्चों की किलकारियां अब नहीं गूंजती। बच्चे मोबाइल पर गेम खेलते नज़र आते हैं।

निर्दलीय के एक सवाल के जवाब में सरिता जी ने कहा कि सोशल मीडिया भारत की नहीं दुनिया के तमाम देशों को अपनी गिरफ़्त में ले चुका है। नेपाल सरकार ने फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, मेसेंजर, यूट्यूब आदि सोशल मीडिया पर बैन लगा दिया तो वहां युवा पीढी सड़कों पर उतर आई। प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के मकान में आग लगा दी और वह इस्तीफा देकर भाग गये। कई शहरों में कर्फ्यू लगाना पड़ा। अनेक लोग मारे गए। पूरा देश अराजक हालात से गुजरा और तख़्ता पलट हो गया। यह घटना साबित करती है कि सोशल मीडिया से महरूम करने के क्या परिणाम होते हैं और इसने युवाओं के दिलो दिमाग़ पर किस क़दर क़ब्जा कर लिया है। भारत में भी जिस दिन नेट नहीं चलता लोगों की चिंता बढ़ जाती है। रात -रात भर करवटें बदलने लगते हैं। डॉटा लगातार महंगा हो रहा है, लेकिन मोबाइल हाथ से नहीं छूटता।

एक अन्य सवाल के जवाब में सरिता जी ने निर्दलीय से कहा कि नेपाल में भयंकर ग़रीबी है, वहां के लाखों युवक रोज़गार के लिए अन्य देशों में छोटे मोटे काम करने को मजबूर हैं। वहीं सोशल मीडिया प्लेटफार्म वहां के युवकों की आय का ज़रिया भी है। इसके व्दारा वहां रोजी रोटी चलती है। भारत में भी हालत बेहतर नहीं है। यहां भी भयंकर बेरोजगारी है और ऐसी हालत में जहां भी काम मिल जाये लोग करने को मजबूर हैं। सोशल मीडिया भी आय का जरिया है, लेकिन नेट बैलेंस सस्ता होना चाहिए।

एक सवाल के जवाब में सरिता जी ने कहा कि टीवी के ज़रिये जो समाचार प्रसारित होते हैं, उन चैनलों पर पूंजीपतियों का कब्जा है, ऐसे में आम आदमी की त़कलीफ़ उजागर नहीं होती है। देश की प्रमुख समस्याएं मसलन बेरोजगारी, महंगाई, खाद्यान्न संकट, पेट्रोल, डीजल की बढ़ती कीमतें आदि को लेकर खबरें ग़ायब हैं। समूचा मीडिया गोदी मीडिया में तब्दील हो चुका है। सरिता जी का कहना था कि वक्त़ का एक दौर था जब हाथों में क़िताबें लिये युवाओं को देखना आम बात थी। बसों और ट्रेनों में लोग अख़बार, पत्रिकाएं और क़िताबें पढ़ते नजर आते थे, लेकिन आज तो सभी के सिर मोबाइल की तरफ झुके दिखते हैं। घरों में भी परिवार के सभी सदस्यों के बीच बातचीत नहीं होती हैं, सभी अपने-अपने मोबाइल चला रहे होते हैं। पहले जहां लोग अपने पड़ोसी से घंटों बोलते बतियाते थे, औरतें एक दूसरे के घर जाकर सुख दुख बांटती थी, ऐसे रिश्ते अब दम तोड़ चुके हैं। आदमी से आदमी दूर हो चुका है।

उल्लेखनीय है कि सरिता जी भिवाड़ी (राजस्थान) में रहती हैं। हिंदी वे साहित्य में एमए के अलावा बीएड हैं और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रवक्ता रही हैं। कविता, कहानियां व समीक्षा लिखने के साथ ही मंच संचालन के क्षेत्र में भी आपका ख़ासा दख़ल रखती हैं। चित्रकला और अभिनय में आपकी गहरी रुचि ही नहीं वरन् इस क्षेत्र में आप पारंगत भी हैं। 'रेशमी अहसास' कहानी संग्रह, 'शुचित्र पन्ने', 'उतर गया चांद जल में,' 'तुम केवल मेरे हो', 'छप्पन भोग', कविता संकलन और 'क़तरा-क़तरा रात पिघलती' (ग़ज़ल संकलन) के अलावा बारह साझा संकलनों में आपकी बीसियों कविताएं संकलित हैं।

आकाशवाणी से आपकी रचनाओं का प्रसारण होता रहा है। निर्दलीय सहित देश के अनेक सुप्रतिष्ठित पत्र- पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। पांच पुस्तकों का संपादन आपने किया है। विभिन्न ७५० साहित्य संस्थानों व्दारा आपको सम्मानित किया जा चुका है। आपकी कविता में प्रेम के विभिन्न रूप परिलक्षित हैं। उनका मानना है कि प्रेम में वह ताक़त है जो दुनिया में आपसी रिश्ते मजबूत बना सकता है और आतंक हिंसा को समाप्त कर सकता है। प्रेम को सरल अर्थों में नहीं देखा जाना चाहिए, वरन इसे विराट स्वरूप में ग्रहण किया जाए। सरिता जी की कविताओं की भाषा अत्यंत सरल और अर्थ पारदर्शी एवं बहुआयामी हैं। कविताओं की आवाज़ बहुत दूर तक जाती है। उनमें दुर्लभ अर्थ विस्तार है। बारबार इनकी रचनाएं पढ़ने पर कई अर्थ खुलते हैं।

-भिवाड़ी (राजस्थान)

पुस्तकों में कैद है संस्कृति

व्यंग्य/
शशिकांत गुप्ते

आज कक्षा पांचवीं में पढ़ने वाला बालक मेरे पास आया,और मुझ से बोला- अंकल मुझे पुस्तक संस्कृति पर हिंदी में निबंध लिखना है। मैने कहा- हिंदी में क्यों?

बालक ने कहा- मैं अंग्रेजी माध्यम में पढ़ता हूं किंतु हिंदी हमें पढ़ना पड़ती है। मैं ने कहा बेटा मैं व्यंग्यकार हूं। मैं तो व्यंग्य लिखता हूं। तुम्हें हिंदी में निबंध लिख कर नहीं दे सकता हूं। बालक बोला- अंकल आप व्यंग्य ही लिख दो वैसे औपचारिकता ही तो करना है। हिंदी भाषा औपचारिकता मात्र ही रह गई है, यह जान कर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, ना हो क्रोध आया।

बहरहाल निबंध लिखने की औपचारिता ही पूरी करनी थी। मैं ने भी बेमन से औपचारिता का निर्वाह किया। प्रस्तावना में लिखा- संस्कृति शब्द हम पुस्तकों में पढ़ते हैं। संस्कारवान साहित्यकारों,संतों, विचारकों, चिंतकों को उनकी जयंती या पुण्य तिथि पर याद कर अपनी औपचारिता निभाते हैं। औपचारिता पूर्ण होने पर उनकी तस्वीर और उनकी पुस्तकों को अलमारी में रख देते हैं। सुबह हम अपनी संस्कृति का स्मरण जरूर करते हैं। कुछ लोग सुबह हाथों में लाठी लेकर संस्कृति की दुहाई देते है। जैसे जैसे दिन चढ़ता है। देश में स्थापित हो रहे वृद्धाश्रम का प्रचार करने में हम जरा भी संकोच नहीं करते है। हम अत्याधुनिक तकनीक से शारीरिक सौंदर्य के साथ केश सज्जा से लेकर हाथ पावं के नाखून तक श्रृंगारित करने सैलून /पार्लर नामक प्रतिष्ठानों में अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए मुंह मांगी रकम अदा करने में गर्व का अनुभव करते हैं।

निबंध का मध्य तो मध्य, संस्कृति शब्द विषय को हूबहू परिभाषित करता है। कारण हम विवाह के दौरान दूल्हे को हल्दी लगाते हैं, दूल्हे के गले में कटार लटकाते हैं और बारात में डिस्को डांस करते हैं। नागिन डांस की परंपरा का निर्वाह करना तो अनिवार्य है। बारात निकालते हुए रास्ते में जाम भी लग जाए तब भी हमें कुछ फर्क नहीं पड़ता है। कारण हम अपनी संस्कृति के साथ पाश्चात्य संस्कृति की मिलावट कर जाम पी कर मदहोश होकर बारात में नाचते हैं। विवाह के दौरान बारात में जाम पीना और नाचना तो हमारी संस्कृति ही बन गई है।

हमें भाई बहन के प्यार को देखकर इतनी घृणा होती है कि हमें लगता भाई बहन जैसे पवित्र रिश्ते का सरेआम इजहार करने से हमारी संस्कृति का ह्रास होता है। सार्वजनिक जीवन में हम अपनी भाषा की मर्यादा को ताक में रख कर अपशब्दों को उच्चारते हुए गाली जैसे शब्दों का प्रयोग करने में कोई संकोच नहीं करते हैं तब संभवतः हमारी संस्कृति में चार चांद ही लगते होंगे। हिंदी दिवस पर हैप्पी हिंदी दिवस कहकर शुभकामनाएं दी जाती है। हिंदी दिवस के दिन मेरे साहित्यकार मित्र को एक संस्था ने मुख्य अतिथि बनाया तब मेरे साहित्यकार मित्र को आत्मग्लानि हुई। कारण वे कह रहे थे- मुझे मुख्य अतिथि बनाया यह सुनकर मुझे बहुत घटिया लगा। इतना ही उपसंहार पर्याप्त समझते हुए मै ने अपने निबंध को पूर्ण विराम दिया। आश्चर्य तो तब हुआ जब मेरे द्वारा संस्कृति पर लिखा निबंध बालक ने अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ा तो इसे प्रथम पुरस्कार मिला। यही स्थिति हमारी हिन्दी भाषा के हमारी संस्कृति की भी हो रही है।

संत शब्द से पवित्रता का बोध होता है। पवित्रता से तात्पर्य सद्हृदय होना। सांसारिक मोह माया मतलब भौतिकवाद से जिसका कोई लेनदेना नहीं होता है। जिसके कथनी करनी में अंतर नहीं होता है। जो सिर्फ उपदेश नहीं देता है। संत तुकारामजी कहा है- आधी केले मग संगीतले अर्थात पहले स्वयं आचरण किया फिर लोगों को उपदेश दिया। जितने भी संत हुए सभी ने पाखंड का घोर विरोध किया है। संत कबीर साहब ने यहां तक कहा है- *संतो देखत जग बौराना। सांच कहां तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना, संतों यह जग पागल है, यदि सच कहूंगा तो मारने दौड़ेगा, झूठ पर विश्वास करेगा।*

संत रविदास द्वारा प्रतिपादित संदेश निम्नानुसार है- समानता, समरसता और स्व-विवेक पर आधारित स्वस्थ समाज की स्थापना। मनुष्य को अंधविश्वासों से मुक्त करके, सत्य कर्मो और अंतर्मन की शुद्धता पर ध्यान केंद्रित करने की प्रेरणा।

संत मीराबाई ने पाखंड के विरुद्ध विद्रोह किया। उन्होंने समाज में व्याप्त पाखंड, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और सामंती समाज की जकड़न के विरुद्ध अपने जीवन और भक्ति के माध्यम से विद्रोह किया। उन्होंने राजदरबार और परिवार के विरोध, सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ा और भगवान कृष्ण के प्रति अपनी अटूट निष्ठा को प्राथमिकता दी। मीराबाई का जीवन उन स्त्री चेतना और मुक्ति की प्रतीक है जो उनके समय की स्त्री-नियति के विरुद्ध संघर्ष करती है।

संत तुकड़ोजी महाराज ने पाखंड का विरोध किया है। ऐसे पाखंड के विरुद्ध विद्रोह करने वालें संतों की बहुत लंबी फेहरिस्त है। संतों के द्वारा उपर्युक्त से प्रतिपादित विचारों को प्रकट करने का कारण है,आज के कथित संत स्वयं को राजनैतिक परिवेश से अछूता रखने में असमर्थ है। इसीलिए इन कथित संतों के लिए भौतिकवाद से भी दूरी बनाना संभव नहीं है।

संतों की भाषा सहज,सरल, स्वाभाविक, सदाचारी, समाज में व्याप्त रूढ़ियों के विरुद्ध होती है। संतों की परिभाषा को स्पष्टता से समझने के लिए धर्म बनाम अध्यात्म पर व्यापक बहस की आवश्यकता है। आध्यात्मिक संत ज्ञानेश्वर जी जिन्होंने मात्र बीस वर्ष की आयु में जीवंत समाधि ली उन्होंने कहा है हे विश्व ची माझे घर अर्थात ये संपूर्ण विश्व ही मेरा घर है। संतों का सोच इतना व्यापक होता है।

-इंदौर

कैसे बढ़े पुस्तक संस्कृति के प्रति नई किशोर-युवा पीढ़ी का रूझान?

रति चौबे

पुस्तक संस्कृति पर लिखने के पूर्व हमें संस्कृति का अर्थ क्या है इस पर प्रकाश डालना चाहूंगी। संस्कृति का अर्थ है विकसित करना या परिष्कृत करना। यह मनुष्य के आसपास के प्रकृति को सुधारने और उसकी उन्नत करने की प्रवृत्ति है।

संस्कृति में किसी भी समाज की भाषा, साहित्य, कला, प्रदर्शनी या व्यवहार का रूप आता है। संस्कृति मानसिकता और भावात्मक विकास पर केंद्रित है। पुस्तक संस्कृति की बात करें तो संस्कृति ज्ञान के प्रसार प्रचार पहचान बनाने और समाज के विकास में रिश्ता कौन की भूमिका महत्वपूर्ण है।

पुस्तक आदिकाल से संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। पुस्तकों में ज्ञान का अटूट खजाना है। हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहजने परपुस्तक के ही रखी जाती है। सामाजिक मुद्दे को बढ़ावा और रचनात्मकता को प्रेरित करती है। पुस्तक ही संस्कृति को आकर देती है हमारी संस्कृति विरासत को सहेज कर पुस्तक ही रखती है। सामूहिक पहचान का निर्माण पुस्तक ही करती है। बौद्धिक विकास और सामाजिक परिवर्तन पुस्तकों के द्वारा ही होता है।

संस्कृति तक संस्कृतिकता को चुनौती पुस्तक देती है और समाज परिवर्तन के लिए वह प्रेरक है। विभिन्न संस्कृतियों का पिटारा संस्कृतियों है। पुस्तक विहीन समाज कुछ प्रदर्शन नहीं कर सकता।

समाज का प्रतिबिंब पुस्तक है। आत्म जागरूकता, स्वानुभूति और रचनात्मकता की प्रेरणा स्त्रोत पुस्तक है। पुस्तक संस्कृति का अभिन्न अंग है। हजारों वर्षों पूर्व इतिहास संस्कृति पुस्तक की साइज कर रखती थी। अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम पुस्तक है । देखा जाए तो पुस्तक केवल कागजों का एक पन्ना नहीं है बल्कि एक समाज के मूल्य विचारों और विचारों को हमारे सामने जैसा का तैसा रखती है। पुस्तक एक सांस्कृतिक धरोहर है जो समाज में परिवर्तन करती है पर आज के डिजिटल योग में पुस्तक संस्कृति को आधुनिक पीढ़ी भूलते जा रही है।

डिजिटल युग मीडिया का युग है। लोग पुस्तकों को ध्यान से रुचि पूर्ण नहीं पड़ते जबकि पुस्तक अभी भी बुद्धि ज्ञान का माध्यम है। शोध से पता चलता है कि इस युग में भी पुस्तक संस्कृति महत्वपूर्ण है पर आधुनिक पीढ़ी इस और कम ध्यान देती है। आज की तेज धारा डिजिटल दुनिया में पढ़ने का महत्व स्क्रीन और तकनीकी के आकर्षण में दब गया है । पर इस युग में भी किताबें शक्तिशाली हैं। मानसिकता बदलने से विचार बदल रहे हैं। खेद की बात है कि आज की पुस्तक संस्कृति से लोग लापरवाह हो रहे हैं। वह गहराई को नहीं समझते और न ही पुस्तक का महत्व। देखा जाए तो पुस्तक संस्कृति ही हमारी आदि व अंत है। समाज के आधुनिक वीडियो को रुचियां उत्पन्न करवाने का प्रयास करवाना पड़ेगा।

पुस्तक संस्कृति को गणित में डालने से पहले उसमें समरसता उत्पन्न करना और करवाना जरूरी है तभी हमारी पुस्तक संस्कृति सदैव गतिशील रहेगी। पुस्तक संस्कृति ही आधुनिकता की नींव है वरना पुस्तक सशक्त नहीं रहेगी। हम अपनी संस्कृति को बचाने के लिए घरों को ढूंढते रहेंगे। आधुनिक पीढ़ी जब समझेगी कि पुस्तक संस्कृति ज्ञान है तो वह पुस्तकों के माध्यम से ज्ञानोन्मुख होगी। नई पीढ़ी गाती है, उछलकूद करती है और प्रचार प्रसार में भी समाज माध्यमों के जरिए प्रगति उन्मुख है । यह पीढ़ी सोचेगी कि आदि अंत भी वही है तब उसे पुस्तक बोझ नहीं लगेगी। वह मां और प्रकृति को प्रगति का माध्यम मानेगी और भाषा को इसका माध्यम बनाएगी तब पुस्तक संस्कृति रसातल में धसेंगी नहीं। पृथ्वी पर एक कल्पवृक्ष बन सदा सर्वदा अपने सुगंध बिखेरती रहेगी।

-नागपुर

पुस्तकों से बनते हैं विवेकशील संस्कार

वल्लभ किशोर शर्मा

भारत में पुस्तक संस्कृति का इतिहास आदिकाल से समृद्ध रहा हैं, उपनिषद, वेद, पुराण, रामायण, महाभारत के अलावा प्राचीनतम कृतियाँ पौथीयां ताड़पत्रों, भोजपत्रों, शिलालेखो और प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियां इसकी गवाह है। यही पुस्तक संस्कृति है जब छपाई के साधन नहीं थे तब भी हस्तलिखित पांडुलिपियों के द्वारा अध्ययन छात्रों को कराया जाता था तथा गुरूकुलों में संग्रह किया जाता था। भारत में पुस्तक संस्कृति का महत्व रहा है। वर्तमान में तकनीकी काल में तो पुस्तक संस्कृति एवं संवर्धन की अति आवश्यक है क्योंकि मोबाइल/ इंटरनेट से सतही जानकारीयॉ मिलती हैं, पर पुस्तकें गहराई और धैर्य देती हैं। विवेकशील संस्कारी बनाती है। मानव सभ्यता के विकास में पुस्तक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। जिस प्रकार वाणी ज्ञान का आदान-प्रदान करती है, उसी प्रकार पुस्तकें उस ज्ञान को सुरक्षित रखकर पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाती हैं। इसी आधार पर पुस्तक संस्कृति की संकल्पना बनी है। पुस्तक संस्कृति का आशय केवल पुस्तकें पढ़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, साहित्य, विज्ञान, दर्शन और अनुभव की सतत् परंपरा है। इसमें पुस्तकों का लेखन, प्रकाशन, संरक्षण, संग्रहण, अध्ययन तथा उनके आधार पर विचार-विमर्श और अनुसंधान सब सम्मिलित होते हैं। ज्ञान का संवाहक पुस्तकें ही मानव की खोज, अनुभव और चिंतन को कालजयी बनाती हैं। मौखिक परंपरा नष्ट हो सकती है, पर पुस्तकों में संरक्षित ज्ञान स्थायी रहता है। सांस्कृतिक निरंतरता किसी भी समाज की परंपरा, संस्कृति, साहित्य और इतिहास पुस्तकों में जीवित रहते हैं। यही भावी पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं।पुस्तकें मौन गुरु भी है जो हमें बिना आवाज किए जीवन जीने की दिशा दिखाती है। समाज में मान सम्मान दिलाने में सहायक होती हैं। मौलिक चिंतन को प्रोत्साहन पुस्तकें नए विचारों और दृष्टिकोणों को जन्म देती हैं। पढ़ने से आलोचनात्मक दृष्टि और सृजनात्मक क्षमता विकसित होती है। लोकतांत्रिक चेतना पढ़ने की आदत व्यक्ति को जागरूक, तार्किक और विवेकशील बनाती है। यही जागरूकता स्वस्थ लोकतंत्र की आधारशिला है।समाज में संवाद और सहिष्णुता पुस्तकों द्वारा ही संस्कृति विविध विचारों को स्थान देती है, जिससे समाज में सहिष्णुता और संवाद की परंपरा सुदृढ़ होती है। आज सूचना तकनीक और त्वरित माध्यमों के दौर में पुस्तक संस्कृति व्यक्ति को गहराई, गंभीरता और धैर्यपूर्ण अध्ययन का अभ्यास कराती है, जो सतही ज्ञान से कहीं अधिक उपयोगी है। पुस्तक संस्कृति मात्र पढ़ने की आदत नहीं है, यह एक ऐसी जीवन दृष्टि है जो व्यक्ति को गहराई, संवेदनशीलता और विवेक देती है। जब समाज पुस्तक केंद्रित होता है तो उसमें ज्ञान का आदर, विचारों का आदान-प्रदान और सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। इसलिए आज भी पुस्तक संस्कृति का संवर्धन आवश्यक है ताकि तकनीक के शोरगुल में भी मानवीयता, विवेक और सृजनशीलता सुरक्षित रह सकें। पुस्तक संस्कृति केवल पढने की आदत नहीं यह ज्ञानवर्धक एवं सृजनशीलता की आत्मा है। -नरसिंहगढ़

पुस्तक अध्ययन की महत्ता

मनोज चतुर्वेदी

विगत वर्षों में यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि समाज के विभिन्न वर्ग—चाहे वह शासकीय अधिकारी हों, कर्मचारी, राजनेता, समाजसेवी, छात्र या साहित्यकार—अपने अनुभवों और विचारों को पुस्तकों के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहे हैं। यह एक सकारात्मक संकेत है, क्योंकि जब विचार शब्दों में ढलते हैं, तब वे समाज में परिवर्तन की दिशा तय करते हैं।

पुस्तकों का प्रकाशन अब पहले की तुलना में कहीं अधिक सरल हो गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों की सहायता से अब कोई भी अपने विचारों को बड़ी आसानी से समाज तक पहुँचा सकता है। कविता, भजन, निबंध, लेख, धार्मिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण जैसे विविध विषयों पर पुस्तकें लिखी जा रही हैं। यह साहित्यिक समृद्धि का प्रतीक है। किन्तु, जिस गति से पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, उसी गति से उनका अध्ययन नहीं हो रहा। बहुत बार पुस्तकें केवल परिचितों और रिश्तेदारों में बाँटी जाती हैं और उनका प्रभाव व्यापक समाज तक नहीं पहुँच पाता। यह स्थिति चिंताजनक है, क्योंकि पुस्तक का असली उद्देश्य तभी पूर्ण होता है जब वह पाठक के हृदय और मस्तिष्क को प्रभावित करे। पुस्तकें केवल विचारों का संग्रह नहीं होतीं, वे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकती हैं। एक लेखक भले ही जीवित न रहे, पर उसके विचार पुस्तक के माध्यम से सदैव जीवंत रहते हैं। पुस्तक का अध्ययन व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि उसे आत्मिक शांति, दिशा और विवेक भी देता है। आज डिजिटल युग में पुस्तकालयों का स्वरूप भी बदल गया है। पहले जहाँ पुस्तक घरों में सदस्यता लेकर पुस्तकें पढ़ी जाती थीं, वहीं अब डिजिटल पुस्तकालयों और ई-बुक्स की सुविधा ने अध्ययन को और भी सुलभ बना दिया है। फिर भी, पुस्तक संस्कृति की सफलता तभी मानी जाएगी जब लोग न केवल पुस्तकों को प्रकाशित करें, बल्कि उन्हें पढ़ें, समझें और जीवन में उतारें। अत: यह आवश्यक है कि पुस्तक लेखन के साथ-साथ अध्ययन की ललक को भी समाज में प्रोत्साहित किया जाए। तभी यह बढ़ती पुस्तक संस्कृति समाज को ज्ञान, संस्कार और चेतना की ओर ले जाने में सफल हो सकेगी।

-भोपाल

पुस्तकों से झलकती संस्कृति

चंचलिका शर्मा

हम संस्कारी तभी बनेंगे जब हम हमारी संस्कृति से जुड़े होंगे । हमारे संस्कार की शुरुआत घर से होती है। माता पिता, दादा दादी, नाना नानी से हमें संस्कार अर्थात हमारे बोलचाल के तरीके, बड़ों को सम्मान, छोटों को स्नेह, प्यार देना हम घर से ही मिलती है।

आगे चलकर हम पुस्तकों से जुड़ते हैं। अलग अलग विषय, अलग अलग जानकारी। हमारी भारतीय संस्कृति अतुल्य है। जब हम इतिहास को पढ़ते हैं तो देश के विभिन्न जाति, धर्म के मर्म को पढ़ते हैं, जानकारी प्राप्त करते हैं। आज भी भारत में अनेक ऐतिहासिक स्थान है जहाँ हमें हमारी पौराणिक संस्कृति के चित्र, मूर्ति गवाह देते हैं कि भारत एक सुसम्पन्न देश है जिसकी संस्कृति अक्षुण्ण हैं।

जब हम दार्शनिक किताबों को पढ़ते हैं तो दर्शन शास्त्र अनेक छुपे हुए रहस्य को उजागर करते हैं। रामकृष्ण परमहंस जी को किताबी ज्ञान तो नहीं था मगर वे साक्षात काली माता के सच्चे साधक थे। काली माता से वे इस तरह कभी कभी रुठते थे जैसे कोई बच्चा अपनी माता से रुकता है। खुद खाते और अपना जूठा खाना माँ को खिलाते थे ठीक उसी तरह जैसे शबरी ने जूठे बेर श्री रामचन्द्र को खिलायी थी। कई ग्रंथालयों में न जाने कितनी किताबें हैं जिनको पढ़े बिना पूर्णतः अपने देश की संस्कृति जान ही नहीं पायेंगे। कई ऐतिहासिक स्थलों में अथवा पुराने मंदिरों के दीवारों चित्र के माध्यम से पुरानी संस्कृति को समझाने की कोशिश की गई है। उस समय के चित्रकार किस तरह बिन कहे, बिन लिखे ही चित्रों के माध्यम से हमें हमारी संस्कृति को उजागर किया है।

बनारस में तुलसी मानस मंदिर में तुलसी दास जी द्वारा लिखे रामायण के दोहे, छंद दीवारों पर सचित्र वर्णन देखने को मिलते हैं। हम मानव हमेशा ही देश के कई पुराने रहस्य को आज भी पढ़ने, जानने के लिए व्याकुल हैं। सच कहा जाये तो पुस्तकों से करीबी दोस्त और कोई भी नहीं। पढ़ने में लीन रहने वाले लोगों को मानों दिन दुनिया से कोई वास्ता ही नहीं। आज के वैश्विक युग में जिस तरह नये नये आविष्कार हो रहे हैं उस पर भी हमारी संस्कृति की छाप तो रची बसी ही है। आगे चलकर यही वैज्ञानिक खोज, गवेषणा इतिहास बनकर आने वाली पीढ़ी को कुछ करने की जिज्ञासा को हल करने कौ बाध्य करेगी। पीढ़ी दर पीढ़ी में समय के बदलाव के साथ साथ संस्कार में भी बदलाव आ रहा हैं, जिसको पिछली पीढ़ी को स्वीकार करना ही पड़ेगा क्यों कि गति शील समय के साथ अगर हम कदम नहीं मिला पायेंगे अथवा जागरूक नहीं होंगे तो हम पीछे ही रह जायेंगे। दरअसल कोई भी कितना भी पढ़ ले वह सम्पूर्ण ज्ञानी कभी नहीं बन सकता क्यों कि माँ सरस्वती की कृपा से हम कुछ हद तक तो हम पढ़ लिखकर हमारी संस्कृति को जान पाये हैं मगर न संस्कृति में ठहराव आयेगी और न ही किताबों का अंत होगा। तभी तो कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। अच्छी पुस्तकों से संकृति की झलक मिलती है और हमारी संस्कृति से हमारे संस्कार दिखाई देते हैं। यही संस्कार, संस्कृति, पुस्तकें हर इंसान के व्यक्तित्व को रचते हैं, गढ़ते हैं, हमारी पहचान बनाते हैं।

– बड़ोदरा

पुस्तकों में बिखरी पड़ी है संस्कृति

मंजूषा रमन धाकरे

हमारे देश की पहचान ही भिन्नता में एकता दर्शाने वाली हमारी संस्कृति हैं। सभी राज्यों की अलग अलग भाषाएं हैं। वहां के निवासी,कस्बे, गावों से लेकर शहरों तक का उनका रहन सहन पेहनावा देखते देखते हम अलग पाते हैं। क्षेत्रों की पुस्तकों में सिखाए जाने वाली भाषा रोज के जीवन बोले जाने वाली अनेकों भाषाएं और खानपान के व्यंजन अलग अलग होते हैं। यही उनकी सांस्कृतिक पहचान दर्शाता हैं।

हर क्षेत्र की लोककला तीर्थस्थल भी दुनिया को आकर्षित करते हैं। कौतुहल वश कहें या भक्ति या फ़िर हमारी आकांक्षाएं हमे लुभाती हैं। हम अपनी संस्कृति को अपने वैदिक साहित्य में पढ़कर आनंद महसूस करते हुऐं दुनियादारी अच्छाई बुराई दोनों ही बातों कों तर्क वितर्क के माध्यम से खुद समझते हैं तथा औरों के समक्ष रखते हैं। इन्हीं विषयों को साहित्यिक जन अपने लेखन के माध्यम से साया करते हैं और इसे साझा करते ऐसे ही हमारे संस्कृतियों की जानकारी देश दुनिया तक पहुंचाते हैं। हमारे महापुरूषों का कार्यकाल राजा महाराजाओं तक सीमित नहीं रहा बल्कि आजादी के बाद नए साहित्य का सृजन हुआ। हम अर्वाचीन साहित्य का अनुमान ही नहीं, उन विषयों पर शोध भी करते हैं। जैसे जैसे हमारा बौध्दिक विकास होता रहा वैसे ही हमारी संस्कृति, रीति-रिवाजों ने भी कला कौशल, गायन वादन और संस्कृति की विभिन्न विधाओं का आनंद लिया। इस हेतु हमने पुस्तकीय ज्ञान तथा व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया जो आज नई पीढ़ी में दिखाई नहीं देता। अतएव हमारा कर्तव्य है कि हम नई पीढ़ी को नए समाज माध्यमों के साथ ही पुराने और पुरातन साहित्य से भी जोड़ें जो पुस्तकों में यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरा पड़ा है।

-संभाजीनगर

पुस्तक मंजूषा में संस्कृति के हीरे-मोती

सविता व्यास

पुस्तक एक बहुत सुंदर नक्काशीदार मंजूषा की तरह है जिसमें संस्कृति अरबों वर्षों से सुरक्षित, संरक्षित है। यह सदियों से इसे संभालती आ रही है और नवपीढी को विरासत में सौंपती जा रही हैं। पुस्तकें ही वह साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृति के बारे में जान सकते हैं। यह सदियों से संस्कृति की आधारशिला रही है किताबें संस्कृति की अभिन्न अंग रही हैं। ये ही पुरातन काल से चली आ रही और वर्तमान काल की संस्कृतियों की प्रतिबिंब की तरह हैं। ये उनको आकार देने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाती आ रही हैं। प्राचीन काल से ही पुस्तकों का उपयोग विचारों और संस्कृति को प्रसारित, संरक्षित करने के लिए किया जाता रहा है।

संस्कृति क्या है?-संस्कृति किसी विशेष समय में लोगों के एक विशेष समूह की मान्यताओं, रीति रिवाजों, मूल्यों और गतिविधियों को परिभाषित करती है। संस्कृति वास्तव में संस्कारों और सभ्यताओं के फूलों से निर्मित बहुत सुंदर गुच्छा है। जिसके हर पुष्प की अपनी सुगंध है जो अपनी -अपनी खुशबू से समाज, देश, परिवार को महकाते हैं। सुप्रसिद्ध विद्वान मैकाइवर एवं पेज ने कहा है संस्कृति मूल्यों, शैलियों व भावनात्मक अभियानों का संसार है। यह हमारे रहने और सोचने के प्रकारों, कार्य -कलापों, कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन एवं आनंद में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।

यह एक सामाजिक विरासत है जो समाज से नवपीढी को मिलते जाता है। किसी समाज के ऐतिहासिक विकास में जीवन -यापन करने के लिए जो नियम विशिष्ट रूप से विकसित हो जाते हैं वही संस्कृति है। यह समाज की पहचान है। सबकी अपनी -अपनी संस्कृति होती है। जिसके जैसे संस्कार होते हैं उसकी वैसे ही संस्कृति होती है, जैसी संस्कृति होती है वैसे ही समाज बनते हैं।

किताबों और संस्कृति में संबंध - किताबों और संस्कृतियों में बहुत गहरा रिश्ता है। ये एक दूसरे के पूरक हैं, सहायक है। पुस्तकें उस समाज के मूल्यों और विश्वासों को प्रतिबिंबित करती हैं जिसमें ये लिखी गई हैं। उस काल को भी प्रतिबिंबित करती हैं जिस समय में ये आकार ली थीं। मध्यकालीन साहित्य में शिष्टता, प्रेम आदि के विषय पाए जाते थे जो अभिजात वर्ग के मूल्यों को दर्शाते थे। नवयुग में जब विज्ञान विकसित हुआ तो तर्क विज्ञान ने स्थान लिया। रूढ़ियों को तोड़ने की कोशिश की गई। जब शासक वर्ग तानाशाह, क्रूर होते गए तो पुस्तकों ने क्रांति की संस्कृति दी। ये संस्कार दिए कि सहते रहना गुण नही है, गलत का विरोध करना भी संस्कार है, संस्कृति है।

प्रेमचंद के समय जब समाज में गरीबी और छलकपट इत्यादि ने जड़े जमाई थीं तो उनके करीब करीब सभी कहानियों में, उपन्यासों में इसका चित्रण है। वे अपने लेखन से समाज की बुराई पर आघात कर अच्छाई की संस्कृति को फिर से स्थापित करने का प्रयास करते दिखे हैं। उस समय समाज में जो मूल्य स्थापित हो रहे थे उनको तोड़कर अपनी प्राचीन संस्कृति की रक्षा करने का गुहार कर रहे थे। शरतचंद्र के काल में स्त्रियों की जो दुर्दशा थी वह उनके उपन्यासों में चित्रित है। नारियों को हमारी संस्कृति में पूज्या कहा गया है उन नैतिक मूल्यों को फिर से जागृत करने का प्रयास किया है, स्त्रियों के सम्मान के लिए आवाज उठाया है उन्होंने,इस तरह इन महान लेखकों के साथ -साथ अन्य महान लेखकों ने उस समय के सांस्कृतिक मानदंडों को चुनौती दी थी और इन मूल्यों को बदलने के लिए पुस्तकों के माध्यम से युवा वर्ग को प्रेरित किया था।

भारत की प्रभावशाली किताबें - यूं तो बाइबिल, कुरान आदि ने अपनी -अपनी संस्कृति को अपने अंतर्मन में संरक्षित रखा है पर भारत के समाज में भी बहुत सी प्रभावशाली किताबें हैं जो यहां की संस्कृति को जीवित रखे हुए है। हमारे वेद-पुराण अरबों वर्षों से हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाते चले आए हैं। शायद ये ही पहली किताबें हैं जिन्होंने संस्कार के बीज बोए, जिन्होंने रहन -सहन के नैतिक मूल्य स्थापित किए। इससे धर्म की स्थापना भी हुई। धर्म क्या है ये बताया गया। भगवद गीता सबसे अधिक प्रभावशाली ग्रन्थों में से एक है। यह लोगों को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है, धर्म की प्रवृति समझाती है। जीने के तरीके समझाती है। इसका गहरा प्रभाव हिन्दू दर्शन और अध्यात्म पर दिखता है। आज विश्व के कई देश भी गीता के दर्शन को अपने जीवन में उतार रहे हैं। इसे कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

रामायण महाभारत ये भी भारतीय संस्कृति की जड़ हैं। इनमें जो नैतिक मूल्य, रहन -सहन, आचार -विचार बताए गए हैं उनका भारतीय जन मानस पर गहरा प्रभाव पड़ा है। तब का

मानव राम की तरह आदर्शवादी बनना चाहता था। श्रवण कुमार की कहानी से माता -पिता की सेवा करने की शिक्षा दी गई है। संस्कृति और नैतिकता के प्रतीक के रूप में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बता युवा समाज को नैतिकता की संस्कृति दी गई है। इनसे प्रेरणा लेकर अच्छे समाज की रचना करना सिखाया गया है। कृष्ण के माध्यम से प्रेम का सात्विक चित्रण किया गया है। प्रेम को प्रधान रखने को तो कहा गया है पर अन्याय के विरोध करने को भी कहा गया है। हमारी पूरी संस्कृति इन्हीं ग्रन्थों से प्रेरित है और हमारी ये किताबें हमारी अच्छी संस्कृति की जननी भी हैं। भारत की संस्कृति के बारे में जानना हो हमें तो हमें जवाहर लाल नेहरू की पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया पढ़नी चाहिए। यह पूरे भारत वर्ष की संस्कृति को दर्शाती उत्तम किताब है जिसे पढ़कर हम भारतीय संस्कृति को व्यापक रूप से समझ सकते हैं।

इन किताबों से शिक्षा मिलती है, जो ज्ञान, बुद्धि मिलती है उससे ही प्रेरित होकर देश, समाज की संस्कृति बनती है। ये समाज की नैतिक व्यवस्था बनाए रखने में मदद करती हैं। हालांकि कुछ पुस्तकों में ऐसे नियम थे जो रूढ़िवादिता, अंधविश्वास को जन्म देते थे तब हममें से कुछ विद्वान सामने आए और किताबों के माध्यम से उन्होंने इन रूढ़िवादिता को चुनौती दी, नए समाज, नए रीति -रिवाज़ स्थापित करने का साहस किया और नई संस्कृति को आकार दिया।

पुस्तकें और संस्कृति का अटूट रिश्ता है। दोनों एक दूसरे को गढ़ती हैं। आज कुछ गंदे साहित्य आ रहे हैं जो हमारे युवावर्ग को प्रभावित कर रहे हैं जिसकी वजह से अवांछनीय घटनाएं घट रही हैं। इन साहित्य को समूल उखाड़ फेंकना होगा। इन्हें प्रकाशित करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा होनी चाहिए, चाहे वह किताब हो या डिजिटल किताब हो। क्योंकि जैसी किताब होगी वैसी संस्कृति होगी, जैसी संस्कृति होगी वैसा समाज होगा। हमें अच्छी किताबों का सम्मान करना होगा और इन्हें हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए संजो कर रखना होगा एक अच्छे समाज के लिए सुकून और शांति के लिए। -इंदौर

किताबें लेती हैं आकार

सतीशचंद सतीश, फरुखाबाद

चेतना के ज्योतिमहल में
गृहण करती हैं आकार किताबें।
उतरती हैं चुपचाप, परत दर परत ,
करने यात्रा, काल और
आकाश के भी पार।
जुड़ती हैं जाकर, देश काल की सीमायें
लांघती, संख्याओं को नकारती,
चेतना दर चेतना से, खुल कर
बतियाती, सजाती, संवारती
हँसाती-रूलाती,
आक्रोश उपजाती हैं किताबें।
सामाजिक व्यबस्था में
व्यबस्थाओं के रास्ते
सुदृढ़ बनाती है,
बहकाती हैं, बहकने से बचाती हैं
यथास्थिति को खतरा
जब बन जाती हैं किताबें।
प्रभुवर्ग के हमले का निशाना
बन जाती हैं किताबें
जलायी जाती हैं किताबें,
मिटाई जाती हैं किताबें
किताब बालों को सलीबों पर
चड़वाती हैं किताबें।
फिर भी नहीं मिट पाती है किताबें
अंधेरे ताहखनों की आग से निकल निकल,
फिर फिर दुनियाँ में छा जाती हैं किताबें।

किताबें और पन्नों की खुशबू...!

संजय एम तराणेकर

एक समय था जब हाथों में होती किताब,
उसे पढ़ने को परिवारजन हो जाते बेताब।
वो दादा-दादी,नाना-नानी की अलमारियाँ,
किताबों से सजी खूब भरी रहती प्यारियां।

ये पुस्तकें नहीं हैं सिर्फ ज्ञान का ही भंडार,
अथाह समुन्दर सी गहराइयों के आरपार।
पढ़-पढ़कर पन्नों की खुशबू से होता प्यार,
चरित्र गढ़ती किताबों पे हमें होता ऐतबार।

ये हमें देती धैर्य, शक्ति, एकाग्रता व गहराई,
सोचने-समझने की आदत सिखते तनहाई।
पुस्तकों से होता भावनात्मक जुड़ाव सुलभ,
कागज़ की किताब पे लिखे शब्द हैं दुर्लभ।

-इन्दौर

भारतीय संस्कृति और पुस्तकों में संत साहित्य

डॉ. साधना शुक्ला

संतों ने बड़े अनूठे साहित्य की रचना की और उसको उन्होंने आध्यात्मिकता से जोड़ दिया! आत्मा को शक्ति, विचारों में भक्ति और कुरीतियों से विरक्ति और यह तीनों का साथ जीवन जीने का एक नया विश्वास उत्पन्न करता है। यही सोच कर बोलचाल की भाषा में गायन वादन शैली के साथ घूम-घूम कर छोटे-छोटे समूह टोलियां बनाकर गांव-गांव, कस्बे-कस्बे तक इसका संचार किया!

संतों ने आश्रम बनाकर अपने शिष्यों को संपूर्ण ज्ञान प्रदान किया। वे गुरु-शिष्य परंपरा का निर्वहन करते हुए, गुरुकुल आश्रम में ज्ञान की परिपक्वता को प्राप्त कर इसी क्रम को आगे बढ़ाते रहे! छोटी-छोटी बातों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना, उसकी उपयोगिता को समझाना, यह कार्य किए जाने लगे और यह सारी गाथा पुस्तकों में दर्ज है।

संत रामानंद ज्ञान की खोज और प्रत्यक्ष भक्ति योग और आध्यात्मिकता के पक्षधर रहें! उन्होंने कहा- ब्रह्म और ईश्वर चित् में स्थित है! जिस प्रकार शरीर से आत्मा को अलग नहीं किया जा सकता, उसी तरह मस्तिष्क से भक्ति को अलग नहीं किया जा सकता है!

रामानंद जी के अनेकों शिष्य थे, लेकिन उनमें प्रमुख शिष्य कबीरदास जी जोगी, जाति से जुलाहा थे। संत रविदास जी जाति से चर्मकार रहे। नामदेव जी दर्जी थे, सेन नाई। पीपा, अनंतानंद, भावानंद, नाभादास, सुखानंद और स्त्री शिष्यों में सुरसरि देवी और पद्मावती और धन्ना जाट। इनके अतिरिक्त और भी शिष्य रहे , जिन्होंने सती प्रथा समाप्त करने, विधवा अधिकार, स्त्री शिक्षा, जातिभेद, वर्गभेद और अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए कार्य किए मूर्ति पूजा का खंडन, बाहरी आडंबर से बचने के सुझाव दिए!

सर्वप्रथम दूसरों को जानने से पहले हमें अपने आप को जानना होगा ,और शुरुआत होती है पुस्तकों से!

रैदास जी ने कहा- मन है चंगा तो कठौती में गंगा
मोको कहां ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास

रविदास जी ने उर्दू, फारसी, खड़ी बोली, राजस्थानी सभी भाषाओं का मिश्रण किया! उन्होंने लिखा - जो जान गया, सो पार गया। एक समय अपना कार्य करते करते वे भजन गा रहे थे- प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। इस भजन को सुनकर राजपूत घराने की वधू मीराबाई ने भक्त रैदास को अपना गुरु बनाया!

संत नामदेव ने गुरु रामानंद जी को अपना सर्वस्व मानकर गुरु के स्थान को सर्वोपरि माना और कहा- सुफल जनम मोको गुरु कीना।

संत पीपा रामानंद के शिष्य बने! वे भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतो में से सर्व प्रतिनिधि संत रहे! गागरोन के शाक्य कवि रहे! सबसे बड़ी बात यह है कि गुरु ग्रंथ साहिब में पीपा की १५४ साखियां, और २७ पद दिए गए हैं! यह एक अमूल्य निधि के रूप में संरक्षित है! गुरबाणी के शब्द कीर्तन में हमें हमेशा सुनने को मिल जाती है!संत पीपा के काव्य की विशेषता यह है कि वे निर्गुण भक्ति से संबंधित समाज सुधारक है- उठ भाग्यो वाराणसी न्याहो गंग हजार। पीपा वे जन् उत्तम घणा। जिण राम कईयों इक बार!

धन्ना जाट, सिख धर्म को मानने वाले थे,उनका कहना है व्यवहारिक धर्म होने के नाते निंदा का त्याग, और गृहस्थ के लिए मोक्ष नितांत आवश्यक है! धन्ना ऐसे भगत हैं जो सांसारिकता में रहते हुए ,ईश्वर और मनुष्य के भीतर सखा भाव रखते हैं, वह ईश्वर से अपने खेतों में बातें करते हैं! संतों की सेवा करते हैं! अपना कमाया हुआ पूरा धन, जन-जन में वितरित करते हैं। सभी की सहायता करते हैं! धन्ना कहते हैं - धन्ना धन् नही रचिये ना रचिये संसार। पग बेड़ी गल रासड़ी यूं ही गये आसार।

-कोलार, भोपाल

पढ़ लो किताबें

मुक्तक
संगीता गुप्ता

मिलेगा देखोगे जो रील,मन में एक जंगल।
मन के धागे जारों से हो,मिले न चैन का पल।।
तरंग नूतन उमंग लोपित,खो दोगे ताल गति।
पढ़ लो किताबें लगेगा ये, नद सी होय कल-कल।।

भारत

बगिया को भी तो रंग,कभी नहीं एक सुहाया।
अलग-अलग सुगंधों से, स्वयं को उसने सजाया।
अलग-अलग भाषा-वेश, खान-पान हैं रहन-सहन।
भारत ही देश ऐसा,संसार जिसमें समाया।।

निराकार

कटते-फटते कागज से,ऐसे हम हैं आकार।
बनते-बिगड़ते बुलबुले,ऐसे हम हैं साकार।।
गल जायेगी ये मूरत,समझो जीवन की रीति,
तुम भी निराकार साथी, सिद्ध हम भी निराकार।।

-ग्वालियर

पुस्तक संस्कृति का क्षरण

सीमा अग्रवाल

भारत की बात करें तो हम पाएंगे कि भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में एक है जबकि भारत विश्व का विशालतम देश है।

यहां के ऋषि, मुनियों ने योग द्वारा हिमालय व अन्य पर्वतों गुफाओं में जाकर तपस्या कर ज्ञान प्राप्त किया। आज भी हमें यह पता चलता है कि साधु संत पहाड़ों में जाकर योग द्वारा ज्ञान को लोगों तक पहुंचाते हैं। भारतीय संस्कृति में हम पाएंगे कि आत्मा परमात्मा की संस्कृति को ही महत्व दिया गया है जो वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के इतिहास में दर्ज है।

अष्टावक्र गीता में राजा जनक ने अष्टावक्र द्वारा ज्ञान प्राप्त किया, जिसमें आत्मज्ञान को ही आदर्श माना गया। इसमें अष्टावक्र जो कि शारीरिक रूप से विकलांग थे इसलिए उनका राजा जनक के दरबार में बहुत अपमान हुआ मगर राजा जनक ने जब उनका ज्ञान सुना। तो संसार से मोह, भौतिक चीजों से मोह, त्याग दिया। हमारे देश में धार्मिक आयोजनों में भारतीय संस्कृति को सबसे उदार बताया गया।

भारतीय संस्कृति में वसुदेव कुटुंबकम की संस्कृति को मान्यता दी गई। तभी भारत में लिखे गए वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता को देश में एक समान पूजनीय माना गया। महाकवि तुलसीदास का रामचरितमानस का प्रभाव, सारे देश में इसी बात का प्रमाण है। पाप और पुण्य के लिए कहा गया है कि परोकार पुण्य है दूसरों को पीड़ा देना पाप है। ऐसा पुराणों में उल्लेख है।

हमारी संस्कृति में विज्ञान और चरित्र, आत्मा का ज्ञान, साहित्य में विषयों की विचार धारा का विशेष महत्व दिया गया है, जो कि मोक्ष प्रदान करता है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। इसकी गौरवशाली परंपरा आज भी विद्यमान है। आज की संस्कृति में बदलाव देखने को मिल रहा है क्योंकि समय में बदलाव आया। हमारे देश ने सदियों तक परतंत्रता झेली, स्वाधीन भारत में भी विकटता रही। हमने मूल्यों को खोया और कई पीढ़ियां दिग्भ्रमित हुई। अब भौतिकतावाद का दिखावा, विदेशी पहनावा, फास्ट फूड के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है पर प्राचीन मूल्यों की सहिष्णुतायुक्त संस्कृति आज भी दिखाई देती है।

वसुदेव कुटुंबकम को कई जगह अनदेखा किया जा रहा है। फिल्मों ने युवाओं को आकर्षित किया किंतु भ्रमित भी किया। टीवी पर अत्यधिक हिंसा देखने से लोगों में, बच्चों में, हिंसा के प्रति संवेदनशीलता कम हो रही है।

कंप्यूटर आने से एक तरफ तो काफी आसानी हुई है किंतु पुस्तक संस्कृति की उपेक्षा चिंतनीय है। लेपटॉप व कंप्यूटर और चलभाष के प्रति बालकों, किशोरों और युवाओं का आकर्षण बढ़ा है तथा ये यंत्र अधिकांश घरों में दिखाई देते हैं तथा विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालय तक में पुस्तकों के स्थान पर यही यंत्री प्रचलन में आ गए हैं पर वरिष्ठ जनों को कार्य करने में दिक्कत आती है।

आजकल की युवा पीढ़ी व बच्चे स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहे हैं। वह अपनी संस्कृति से ज्यादा भौतिक चीजों मनोरंजन की ओर बढ़ रहे हैं तथा पुस्तकों के स्थान पर समाज माध्यमों के प्रति उनका आकर्षण बढ़ा है। व्रत और अनुष्ठान की जगह उनमें पहनावा, दिखावा अधिक है। वर्तमान नई पीढ़ी देश की सभ्यता, संस्कृति और मौलिक मूल्यों को भूल रही है। खानपान और पहनावा ही नहीं बल्कि व्यवहार में विशेष तौर पर विदेशी पन की झलक नजर आ रही है।

हमारी संस्कृति पर टीवी पर रियलिटी टीवी शोज़ का बहुत प्रभाव पड़ रहा है। टीवी की शिक्षा से संयुक्त परिवारों की खिल्ली उड़ाई जा रही है, दूसरी ओर एकल परिवारों को सुखी बताया जा रहा है। बड़ों का सम्मान, पारिवारिक मित्रों को नष्ट कर दिया गया है। वृद्ध पीढ़ी को बार-बार उपेक्षित किया जाता है और उनको अपने ही हाल पर छोड़ दिया जाता है। दुख की बात है खुले कपड़ों का पहनावा बनाम नंगपन इस पीढ़ी का हिस्सा माना जा रहा है। इसमें विवाह की परंपरा में भी बदलाव देखा जा रहा है, जो सब टीवी और विदेशी जीवन शैली को अपना रहे हैं। विवाह के स्थान पर नए युवक-युवतियां सह जीवन की ओर अग्रसर हैं तथा बुजुर्गों को वृद्ध आश्रम भेजा जा रहा है।

सबसे चिंतनीय बात यह है कि पुस्तक संस्कृति अर्थात किताबों को पढ़ने का चलन कम हो रहा है। भारतीय भाषाओं की भी उपेक्षा देखी जा सकती है। अंग्रेजी किताबों को पढ़ने में गर्व की बात मानी जा रही है। हैरी पॉटर का किरदार बच्चों को मां-बाप प्रेरित कर रहे हैं। अंग्रेजी शिक्षा के कारण बच्चे, विदेश में बसना पसंद कर रहे हैं। किताबों की खरीदारी देश में कम नजर आ रही है।

नवयुवक और युवतियां अंग्रेजी भाषा में बोलना गर्व समझते हैं। हिंदी हिंदी और मातृभाषाओं में शिक्षण अर्थात पढ़ाई के प्रति आकर्षण में कमी आ रही है। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

-भोपाल

संस्कृति के लिए जरूरी क्यों हैं पुस्तकें?

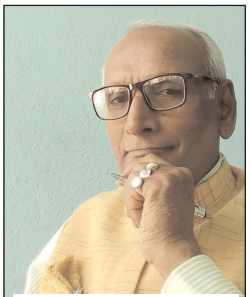

उदय नारायण सिंह

शास्त्रकारों ने धर्म और संस्कृति को बहुविध परिभाषित किया है।जब से धर्म की परिभाषा चल रही है तब से आजतक न जाने पंचनदों में से कितने जल निकलकर सागर में मिल गए, कहा नहीं जा सकता।

बहुतेरे विद्वान धर्म को अंग्रेजी शब्द Religion का हिंदी रूपांतरण मानते हैं, पर Religion शब्द लैटिन शब्द Regilo से बना है, जिसका अर्थ Obligation और Bond होता है। इस तरह अंग्रेजी शब्द Religion का अर्थ बड़ा ही संकुचित और संकीर्ण है। एक छोटे दायरे में बंधा हुआ है।

आज़ के बहुतेरे विद्वान और दार्शनिक Religion शब्द से संप्रदाय का अर्थ करते हैं। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भी Religion को संप्रदाय कहने में कोई संकोच नहीं किया है। दूसरी ओर धर्म का अर्थ बहुत व्यापक है।

भारतीय संस्कृति के अंतर्गत धर्म शब्द की व्युत्पत्ति धृ-धातु से हुई है, जिसका अर्थ होता है धारण करना। शास्त्रकारों ने कहा है - धारयेति इति धर्म अर्थात सचराचर का जो प्रकृति जन्य स्वभाव है,गुण है वही उसका धर्म है। यथा सूर्य का स्वभाव है गर्मी/उर्जा देना, तो चांद का स्वभाव है शीतलता प्रदान करना।जल का स्वभाव नीचे की ओर बहना और वसुधा को ढंडा रखना है, तो अग्नि का स्वभाव उष्णता प्रदान करना है। इसी तरह वायु का स्वभाव बहना तो पृथ्वी का स्वभाव बीज को अंकुरित करना है। पंच महाभूत का भी अपना धर्म है, स्वभाव है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रकृति जन्य जिस प्राणी का जो स्वभाव है, वही उस प्राणी एवं जीव का धर्म है।

आज का मानव धर्म से विलग होता जा रहा है। आज की अंधी दौड़ में धर्म और मोक्ष सर्वथा उपेक्षित है। यह अत्यंत दुर्भाग्य की बात है कि आज हमारे साहित्यकारों को भी धर्म पर लिखने में कलम की स्याही कम पड़ जाती है। उन्हें धर्म पर कुछ लिखते, बोलते शर्म आती है,जिसका परिणाम है कि हमारे समाज में नफ़रत, घृणा, व्यभिचार, भ्रष्टाचार और अनाचार आदि व्यापक रूप से व्याप्त हैं।

आज मानव अंतः से अशांत, बेचैन और व्याकुल है। उपर्युक्त वर्णित परिप्रेक्ष्य में एक कथा याद आ रही है। बात ई सन् से ३२२ वर्ष पूर्व की है। एक बार मगध सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु और महामात्य चाणक्य से पूछा - गुरुदेव मुझे यह बताएं कि अर्थ जीवन के लिए जरूरी क्यों है? चाणक्य ने कहा - अर्थ धर्म के लिए जरूरी है। चन्द्रगुप्त ने फिर पूछा - धर्म क्यों जरूरी है ,तो महामात्य चाणक्य ने कहा -धर्म चरित्र निर्माण के लिए जरूरी है। चन्द्रगुप्त ने पुनः पूछा कि - चरित्र क्यों जरूरी है तो उत्तर में महामात्य चाणक्य ने कहा -चरित्र गणतंत्र के लिए जरूरी है। इसके बाद चन्द्रगुप्त ने फिर पूछा कि गणतंत्र क्यों जरूरी है? इसके उत्तर में महामात्य चाणक्य ने कहा - गणतंत्र व्यवसाय के लिए जरूरी है। चन्द्रगुप्त ने फिर पूछा, व्यवसाय क्यों जरूरी है? इसके जवाब में चाणक्य ने कहा - व्यवसाय अर्थ के लिए जरूरी है।

उक्त कथा को यहां उद्धृत करने का अभिप्राय इतना ही है कि इस कथा की धुरी में भी धर्म हीं है। भारतीय संस्कृति के अंतर्गत धार्मिक होने का अर्थ है चरित्रवान होना है नहीं कि सम्प्रदायिक होना। गर हम चरित्रवान हैं तो इसका सीधा अर्थ है कि हम धार्मिक हैं।

इस कथा से यह भी प्रमाणित होता है कि धर्म सम्प्रदाय नहीं है बल्कि धर्म सचराचर का प्राकृतिक गुण है, स्वभाव है। धर्म हमें अपने मानवीय स्वभाव एवं गुण में रहना सिखाता है। धर्म हमें उचित व्यवहार,शुभ संकल्प करने हेतु प्रेरित करता है ।यह हमें अर्थ और काम जैसे भौतिक पुरुषार्थ को पाने हित उचित एवं शुभ प्रेरणा देता है । धर्म हमारे जीवन का पथ प्रदर्शक है,जो हमें अच्छा कृत करने हेतु प्रेरित करता है । वैदिक साहित्य से लेकर वर्तमान साहित्य तक जो पुस्तकों में दर्ज है के प्रति लोगों का आकर्षण भले ही कम हो रहा हो लेकिन हमारी संस्कृति के तहत धर्म की जो परिभाषा है उसे नहीं बदला जा सकता।

हम पाते हैं कि धर्म किसी पंथ या सम्प्रदाय का नाम नहीं है वरन् धर्म सचराचर का प्राकृतिक और नैसर्गिक गुण है और वह सार्वभौमिक है जबकि Religion किसी विशेष मान्यताओं को वरण करने वाला संप्रदाय या समूह है। इस तरह मानव का पहला धर्म -मनुर्भवः है अर्थात मानवता है। इसीलिए अपने स्व से ऊपर उठकर - आत्मवत सर्वभूतेषु,सर्वभूतहिते रताः , तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से सकल कार्यों का संपादन करना ही सही अर्थों में धर्म है ,इसीलिए धर्म सिर्फ हमारी सनातन संस्कृति के लिए ही जरूरी नहीं है बल्कि विश्व संस्कृति के लिए जरूरी है और सबसे जरूरी है हमारा ध्यान, हमारे सनातन साहित्य की ओर जाना जिसे वैदिक संस्कृति में ही पाया जा सकता है और यह वैदिककालीन पुस्तकों के स्वाध्याय के बगैर पूर्ण नहीं हो सकता। हमारी संस्कृति के क्षरण को रोकने के लिए पुस्तकें जरूरी हैं।

-मुजफ्फरपुर, बिहार

भारतीय संस्कृति हमारी विरासत

राजकुमारी चौकसै
'प्रेरणा'

प्रथम प्रभु सुमरन करती गौरी पुत्र गणेश।
आकर काज सिद्ध करो ब्रम्हा विष्णु महेश।।

भारतीय ज्ञान परम्परा में रामायण की अहम भूमिका है। रामायण के रचियता महर्षि बाल्मीकि भारतीय संस्कृति के जनक भी कहे जाते हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति हमारी धरोहर है और हिन्दी भाषा हम भारतीयों की आत्मा। जैसे शरीर व जीव का नाता होता है, वैसे ही हिन्दी हिन्दुस्तान की आत्मा है। यदि शरीर से आत्मा निकल जाती है, तो शरीर निर्जीव हो जाता है, वैसे ही यदि हमारी हिन्दी मातृ भाषा व हमारी भारतीय परम्पराओं का हनन होता है, तो हमारी भारतीय संस्कृति भी निर्जीव की तरह हो जावेगी, क्योंकि यही हमारी धरोहर है, यही हमारी पहचान है और यही हमारी विरासत है।

हमे एक सूत्र मे बांधने के लिए हमारे प्रभु श्री राम ने भी तदनुसार आचरण कर समाज को एकीकरण का सन्देश दिया। हमारे पूवर्जो की धरोहर का मान रख कर उन्होंने समाज को एक सूत्र में बांधने व मानवता का पाठ पढ़ाया। संत शिरोमणि महान कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीमद्रामचरित मानस मे इसका वर्णन कर हिन्दु समाज पर जो उपकार किया है,इसके लिए हमारा समाज सदैव ऋणी रहेगा।

नये साहित्य का सृजन भी लोक कल्याण की दृष्टि को ध्यान में रख कर होना चाहिए। साहित्य को जीवन प्रदायिनी शक्ति कहा गया है। यह समाज के लिए संजीवनी बूटी का काम करती है ।

हवा के झौके के साथ जब डाल की पत्तियाँ कहां से कहां तक उड़ जाती है , नदी की धार के साथ बहता हुआ तिनका गंगोत्री से गंगासागर तक पहुंच जाता है, चिड़िया जो सात समंदर पार अपने पंखो से करती रहती है, मनुष्य जीवन इससे भिन्न नही है।

हमारी भारतीय संस्कृति हमें कर्म और धर्म का पाठ पढ़ाकर जीवन को सही सोच के साथ जीना सिखाती है ताकि मनुष्य अपने सत्कर्मो से असंभव को भी संभव कर सकें। किसी कवि की पंक्तिया हैं-

कर्म तुम्हारे अच्छे है, तो किस्मत तुम्हारी दासी है।
मन तेरा साफ है, तो घर मे मथुरा काशी है।।

जिन्दगी को इतना आनंदमय बनाओ कि उदासी कोसों दूर रहे, इसके लिए हमेशा विनम्र बने रहो। जो झुकता है, उसे परमात्मा की प्राप्ति होती है। स्वयं को अहंकार से दूर रखो। कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना भी पड़ता है। अहंकार रुपी शस्त्र मनुष्य के पतन का कारण बनता है। यह रामायण ने सिद्ध कर दिखाया है। राम-रावण युद्ध इसका उदाहरण है। इसीलिए हमारे वेद-व्यास भी हमें यही शिक्षा देते हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व का आंकलन उसकी समृद्धि व उसके द्वारा अर्जित भौतिक सम्पत्तियों के आधार पर नहीं बल्कि संस्कार रुपी विरासत व संस्कृति के आधार पर किया जाता है जो हमारे धार्मिक ग्रंथों में मौजूद है। पुस्तक संस्कृति भारतीय संस्कृति और हमारी विरासत का ही प्रतिफल है।

श्री मदभगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने गीता का ज्ञान देते हुए अर्जुन से कहा था- कर्म करो फल की चिंता मत करो। राम चरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी की चौपाई है-

प्रातः काल उठ के रघुनाथा
मात-पिता गुरु नावई माथा।

संस्कार व संस्कृति ही हमारी धरोहर है। हमारे वेद-पुराण इसके संवाहक है। आगे चौपाई आती है-

गुरु गृह पठन गये रघुराई,
अल्प काल विद्या सब पाई।।

ज्ञान का होना अलग बात है, लेकिन ज्ञान का सही तरीके से उपयोग करना व बुद्धि का सही जगह उपयोग करना सबसे बड़ी बात है।

हमारी भारतीय संस्कृति व हमारे शास्त्र हमे सिखाते हैं कि ये मानव जीवन बड़ा अनमोल है, ये बहुत ही पुण्य कर्मो से प्राप्त होता है। ईश्वर की यह अमुल्य निधि को मानव कल्याण व समाज हित व अपनी मातृभूमि के लिए समर्पित भाव से न्यौछावर करना ही सच्ची देश भक्ति है।

इसके लिए आवश्यकता है साहस की, समझदारी की व तीव्र इच्छा शक्ति की। यदि आप में लगन है, विश्वास है, मेहनती वृत्ति है, तो दुनिया का कोई भी काम असंभव नही है। आज हमारे भारत देश का नाम बहुत ऊंचा है, यहां की संस्कृति को विदेशी लोग भी अपनाने लगे हैं ।

आज की हमारी युवा पीढ़ी बहुत मेहनती है। उन्होंने हर क्षेत्र मे कामयाबी हासिल की है, जरूरत है तो बस अपनी संस्कृति व संस्कारों को बनाये रखने की जो हमे अपने ऋषि-मुनियों से प्राप्त हुये हैं। यह भारत भूमि श्री राम व श्री कृष्ण की जन्म भूमि है, जहां आने को देवता भी आतुर रहते हैं। हम उस देश के वासी है, जहा गंगा, जमुना, रेवा जैसी पवित्र नदियां हमारी आस्था व विश्वास की केन्द्र बिन्दु हैं। हमारी संस्कति हमें यही शिक्षा देती है कि जिस तरह वृक्ष पर फल लग जाने पर उसकी डालें झुक जाती है। उसी प्रकार हमे भी कुछ उपलब्धि पा लेने पर भी विनम्र बने रहना चाहिए।

स्वयं मानवरहित होते हुए जो सबको मान देते हैं। ऐसे प्राणी से भगवान कहते हैं- मुझे प्राणों से भी प्रिय है। ऐसा शास्त्रों में

वर्णित है।

महर्षि वेद व्यास जी का कहना है- मैं तुम से अत्यंत गुप्त रहस्य की बात कहता हूं कि ईश्वर की सबसे श्रेष्ठ कृति मनुष्य ही है।

स्वयं विवेकानंद जी ने भी कहां है- मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोत्तम साक्षात मंदिर है।

उसी मानव देव की पूजा के निमित्त ही हमे अपनी कलम के माध्यम से अपनी हिन्दी भाषा का मान बढाते हुए ज्ञान का प्रकाश फैलाये आंनद ,खुशी, यथार्थ, सत्य का उदघाटन कर साहित्य का सृजन ऐसा हो जिसका प्रकाश भीतर-बाहर दोनों ओर अपनी आलोकित किरणों से साहित्य जगत को जग-मगा दे।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, क्योंकि व्यक्तिओं के समूह से ही समाज बनता है। जब हम किसी भी कार्य को करने का सच्चे मन से संकल्प लेते हैं तो वह अवश्य पूर्ण होता है लेकिन हमे विवेक से कार्य करना है व सत्य संकल्प के लिए ईश्वरीय विश्वास का होना अति आवश्यक है क्योंकि कार्य तो ईश्वर की कृपा से ही होता है, मनुष्य तो निमित्त मात्र है। समर्पण भाव व विश्वास की अखंडता एक मजबूत और संस्कारित समाज की रचना करती है। यह सत्य संकल्प भी हमे रामायण से ही मिलता है। जब भगवान श्री राम ने रावण के वध करने का संकल्प लिया तो ब्रम्हाण्ड की सारी शक्तियां उसमे सहयोगी बन गई। हंसते मुस्कराते हुए जीना भी एक कला है । टूटे हुए दिलों को सीना भी एक बड़ी कला है ।

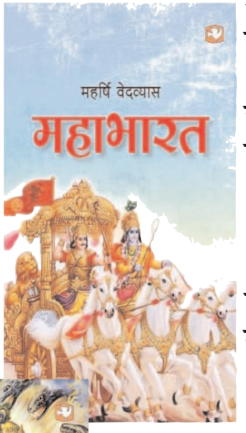

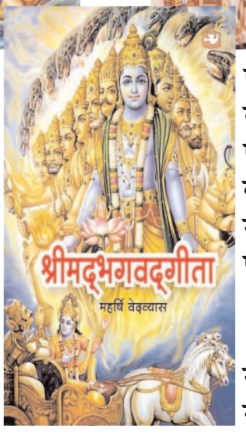

हमेशा बच्चो की तरह हंसते-मुस्कराते रहो, हंसते रहो हंसाते रहो, क्योंकि खिलते हुए फूल सभी को अच्छे लगते हैं, मुरझाए हुए फूलों को कोई पंसद नही करता।

अगर आप किसी के लिए अच्छी सोच रखते हैं, तो वह भी आपके लिए अच्छा ही सोचेगा। इसीलिए हमारी संस्कृति हमे सकारात्मकता की ओर प्रेरित करती है। यह सन्देश भी हमें रामायण से ही प्राप्त होता है।

योग से हमारा मन शांत रहता है

पवित्र मन की उर्वरा भूमि पर शुभ-विचार रुपी बीज जब अंकुरित होते है, तो वह धीरे-धीरे विकसित होते-होते एक बड़े-बड़े वट -वृक्ष बन जाते है जिनकी छाया मे सभी का मन शीतल होता है। इस हेतु यौगिक क्रिया आवश्यक है।

रामायण का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव है। यह हमे सदाचार सद्कर्म, मर्यादा, भक्ति-भाव, आशा-विश्वास, नैतिकता, परोपकार जैसे मूल्यों से अवगत कराती है।

भगवान श्री राम का आदर्श भारतीय संस्कति का संवाहक है। उनका आदर्श, उनका चरित्र व उनकी शिक्षा हमारे जीवन की नींव का पत्थर है। भक्ति की पराकाष्ठा हमे अरण्य कांड मे देखने को मिलती है। संत-मंहतों की भक्तों की यही पुकार होती है -

सीता अनुज समेत प्रभु
नील जलद तनु स्याम।
मम हियँ बसहू निरंतर
सगुन रुप श्री राम। ।

ईश्वर की असीम छवि यदि हृदय में बस जाये तो इससे बड़ी और कोई निधि हो ही नही सकती। यह भारतीयता की पहचान है। हम भगवान श्री राम का नाम हर समय-समय पर अलग-अलग रुप मे लेते है।

कहीं श्री राम कहीं जय-जय राम तो कभी राम-राम अरे राम हे राम आदि का स्वर गूंजता है और सभी का अर्थ समयानुसार अलग-अलग है। इसके भारतीय वैज्ञानिक कारण भी हैं।

सुन्दर कांड की एक चोपाई है। जब हनुमान जी सीता का पता लगाने के लिए निकलते है तो यह चौपाई याद आती है-

प्रविसि नगर कीजै सब काजा,
हृदय राखि कौशलपुर राजा।

यह चौपाई हमे यह सन्देश देती है कि जब हम किसी यात्रा के लिए प्रस्थान करें तो यह चौपाई बोल कर घर से निकलें तो आपको कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

हमारी भारतीय संस्कृति में धर्म व कर्म पर विशेष ध्यान आकर्षित किया गया है। उतनी आस्था व विश्वास के साथ शनिवार/मंगलवार सुन्दर काण्ड का पाठ सावन के महिने में विशेष रुप से घर-घर रामायण का पाठ, विशेषकर नवरात्रि पर्व पर रामायण पाठ व दुर्गा सप्त सती पाठ हम भारतीयों की संस्कृति है। भारतीय परम्पराओं का इससे गहरा संबंध है।

शादी-ब्याह जन्मोत्सव मुडंन संस्कार

शादी-ब्याह जन्मोत्सव मुडंन संस्कार, अंतिम संस्कार या फिर प्रकृति पूजन जैसे पीपल की पूजा वट सावित्री पूजन तुलसी पूजन आदि हमारी भारतीय परम्पराओ के साथ-साथ वैज्ञानिक कारण भी संजोए हुए हैं।

सूर्य व चन्द्रमा पूजने का अभिप्राय यह है कि हमें धर्म के साथ-साथ शक्तिशाली ग्रहों की ऊर्जा भी हमे प्राप्त हो। नदी को हम मां कहते हैं। धरती को हम मॉ कहते हैं जगत-जननी मां हम-सब की जन्म दात्री मॉ इन सब की कृपा से ही हमें मानव तन प्राप्त हुआ है। पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, अग्नि आदि पंच तत्व से ही हम बने हैं। बाद में पंच तत्व में ही विलीन होना है। हमारे वेद-पुराण रामायण जैसे ग्रन्थ इनके प्रमाण हैं। यह हमारी भारतीय परम्पराओ के मुख्य अंग है।

-भोपाल म.प्र

समाज में व्याप्त गुणों का समग्र रूप है हमारी भारतीय संस्कृति

सूफिया ज़ैदी

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है,जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने,बोलने, साहित्य कला आदि में परिलक्षित होती है।

संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घ काल तक अपनाई गई पद्धतियों का परिणाम है। संस्कृति का शब्दार्थ है उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है।यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर प्राकृतिक परिस्थिति को निरंतर सुधारता और उन्नत करता रहता है।

ऐसी प्रत्येक जीवन पद्दति रीति-रिवाज रहन-सहन आचार विचार जिनसे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता और संस्कृति का अंग है।

सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही संतुष्ट नहीं होता। वह भोजन से ही नहीं जीता। शरीर के साथ मन और आत्मा भी हैं। भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है,किन्तु इसके बावजूद मन और आत्मा तो प्यासे ही रहते हैं। इन्हे संतुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है उसे संस्कृति कहते हैं।

मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं। सौंदर्य की खोज करते हुए संगीत,साहित्य,मूर्ति,चित्र आदि संघटनों का निर्माण करता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक कृति,संस्कृति का अंग बनती हैं।इनमें प्रधान रूप से धर्म दर्शन सभी ज्ञान विज्ञान और कलाओं सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है।

संस्कृति जीवन की विधि है जो भोजन हम खाते हैं,जो कपड़े पहनते हैं,जो भाषा बोलते हैं और जिस भगवान की पूजा करते हैं ये सभी सभ्यता कहलाते हैं। तथापि इनसे संस्कृति भी सूचित होती है।

जहां तक पुस्तक संस्कृति का सवाल है इसका क्षरण हो रहा है। कृत्रिम बुद्धि और गुगल गुरु ने इस संस्कृति पर विपरीत प्रभाव डाला है।

सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसके आधार पर हम सोचते हैं और कार्य करते हैं। इसमें वे भाव और विचार भी सम्मिलित हैं जो हमने एक परिवार और समाज के सदस्य होने के नाते उत्तराधिकार में प्राप्त किये। संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी अन्तःस्थ प्रकृति की अभिव्यक्त है। यह हमारे साहित्य में,धार्मिक कार्य में मनोरंजन और आनंद प्राप्त करने के तरीक़ों में भी देखी जा सकती है। संस्कृति के दो भिन्न उप विभाग कहे जा सकते हैं। भौतिक और अभौतिक।

भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारी सभ्यता कहलाते हैं और हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से सम्बद्द होते हैं जैसे हमारी वेशभूषा,भोजन घरेलू सामान आदि।अभौतिक संस्कृति का संबंध विचारों आदर्शों भावनाओं और विश्वासों से है।

संस्कृति एक समाज से दूसरे समाज तथा एक देश से दूसरे देश में बदलती रहती है। इसका विकास एक सामाजिक अथवा राष्ट्रीय संदर्भ में होने वाली एतिहासिक तथा ज्ञान सम्बंधी प्रक्रिया व प्रगति पर आधारित होता है। उदाहरण के लिए हमारे अभिवादन की विधियों में,हमारे वस्त्रों में,खाने की आदतों में,पारिवारिक संबंधों में सामजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों और मान्यताओं में भिन्नता है।सच कहें तो किसी भी देश के लोग अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं द्वारा ही पहचाने जाते हैं। संस्कृति यद्यपि किसी देश या कालविशेष की उपज नही होती,ये एक शाश्वत प्रक्रिया है,तथापि किसी क्षेत्रविशेष में किसी काल में इसका जो स्वरूप प्रकट होता है,उसे एक विशिष्ट नाम से परिभाषित किया जाता है। मध्ययुगीन संस्कृति,भौतिक संस्कृति,पाश्चात्य संस्कृति,हिन्दू संस्कृति तथा मुगल संस्कृति आदि की संज्ञाएं इसी आधार पर प्रदान की गई हैं।विशिष्ट अभिधान संस्कृति के विशिष्ट स्वरूपबोध के साथ इस तथ्य को उजागर करता है कि संस्कृति को विशेषण प्रदान करने वाले कारक द्वारा संस्कृति का सहज स्वरूप अनिवार्यतः प्रभावित हुआ है।

-सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा,भाषा और संस्कृति देश की समृद्धि का पैमाना

संजीव ठाकुर

शिक्षा सदैव समाज, संस्कृति और सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील और प्रगतिशील रही है। यह न केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की आधारशिला भी है। शिक्षा, ज्ञान, कला, साहित्य और संस्कृति को देश-विदेश की सीमाओं में बाँधना संभव नहीं है। यह असीमित भंडार है, जिसमें आकाशीय ऊँचाइयाँ भी शामिल हैं। न केवल इसकी गहराई को नापा जा सकता है, न ही इसकी ऊँचाई को देखा जा सकता है। शिक्षा और ज्ञान की यह विशालता मानव जीवन में अनंत संभावनाओं के द्वार खोलती है।

पूर्वी सभ्यता, विशेषकर भारतीय परंपरा, जहाँ अध्यात्म, वेद, पुराण और योग पर आधारित है, वहाँ पश्चिमी सभ्यता विज्ञान, तकनीकी नवाचार और अनछुई रहस्यमय खोजों पर आधारित है। इन दोनों सभ्यताओं ने अपने-अपने क्षेत्र में मानव जीवन को बदलने वाले अनमोल योगदान दिए हैं। उदाहरण स्वरूप, पश्चिमी विज्ञान ने मानव को चंद्रमा पर पहुँचने का अवसर दिया और आधुनिक तकनीक जैसे हवाई जहाज, इंजन, रेडियो और डिजिटल तकनीक से जीवन को सरल और उन्नत बनाया। वहीं, भारतीय ज्ञान और दर्शन ने योग, आयुर्वेद, ध्यान और जीवन मूल्यों के माध्यम से मानव जीवन में शांति, संतुलन और आत्मसाक्षात्कार की दिशा प्रदान की। इस प्रकार शिक्षा, भाषा और ज्ञान ने पूर्व और पश्चिम के बीच समन्वय स्थापित किया। पश्चिम ने भारतीय दर्शन, आयुर्वेद और योग को अपनाकर अपनी जीवनशैली में संतुलन पाया, और भारत ने पश्चिम के विज्ञान और तकनीकी ज्ञान को अपनाकर विकास की नई ऊँचाइयों को छुआ। शिक्षा और भाषा सदैव अज्ञानता के तमस में प्रकाश की तरह कार्य करती रही है। यह नवजीवन की विकास धारा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और समाज में सतत प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारतीय संस्कृति और दर्शन में जैन, बौद्ध, नव्य वेदांत और आधुनिक चिंतन ने समाज में नवयुग की कल्पना को साकार किया। वहीं पश्चिम के दार्शनिक और चिंतक जैसे प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स और लेनिन ने सामाजिक और राजनीतिक विकास के सिद्धांत प्रतिपादित किए, जिन्हें पूरी दुनिया ने अपनाया। इस प्रकार, दोनों सभ्यताओं में ज्ञान और विचारों का आदान-प्रदान निरंतर जारी रहा।

भारतीय समाज में हमेशा सुधार और नवीन युक्तियों को अपनाने की क्षमता रही है। स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात राजनीति और समाज में हुए परिवर्तन इसका सजीव उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, गांधीजी ने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को साकार किया, जबकि जवाहरलाल नेहरू ने विज्ञान और तकनीक के माध्यम से आधुनिक भारत की नींव रखी। सुभाष चंद्र बोस और बाल गंगाधर तिलक ने स्वतंत्रता संग्राम में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। इन सबके प्रयासों ने भारत को विश्व पटल पर एक नया स्वरूप और पहचान दी।

पाश्चात्य ज्ञान ने हमें अपने आडंबर, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता पर विजय पाने में मदद की। उदाहरण के लिए, वास्तु, जन्मकुंडली और अंधविश्वास से जुड़े कई प्रचलित विश्वासों को आधुनिक विज्ञान और शिक्षा के माध्यम से समाज से दूर किया जा सका। यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा और ज्ञान समाज में समग्र सुधार और नवप्रवर्तन के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं।

हमारे दैनिक जीवन में भी शिक्षा, भाषा और ज्ञान हमें यह एहसास कराते हैं कि हम अभी भी कितने पीछे हैं और कितनी दूर तक सीखने की आवश्यकता है। ज्ञान का कोई अंतिम स्रोत नहीं होता; यह एक ऐसा समृद्ध भंडार है, जिसमें जितना भी सीखना संभव है, वह निरंतर बढ़ता रहता है। अतः हमें सदैव प्रयासरत रहना चाहिए कि हम पल-पल कुछ नया सीखें—हर व्यक्ति, हर समाज, और हर सभ्यता से। शिक्षा, भाषा और ज्ञान ही हमें समृद्ध, विकसित और परिवर्तनशील बनाते हैं। परिवर्तनशील जीवन ही नई ऊर्जा, आशा और विकास की नींव रखता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो हर मानव, हर समाज और हर राष्ट्र के लिए सीखने, अपनाने और नवाचार करने की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। यही कारण है कि शिक्षा और ज्ञान न केवल व्यक्तिगत उन्नति बल्कि समग्र मानवता के विकास के लिए अनिवार्य हैं।

-रायपुर, छत्तीसगढ़

अनुपम धरोहरः पुस्तक संस्कृति

– डॉ. कविता मल्होत्रा

किसी भी समाज की पहचान उसके जीवन मूल्यों, नैतिक परंपराओं, कलाओं और जीवन शैली से होती है, इसलिए संस्कृति को समाज का दर्पण माना जाता है।संस्कृति शब्द दो शब्दों के योग से बना है - संस् जिसका अर्थ है उत्तम और कृति जिसका अर्थ है कार्य। इस प्रकार संस्कृति का अर्थ है उत्तम कार्य या उत्तम संस्कार, जो मानव के लौकिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अनिवार्य भी है और मानव को जीवन जीने का सही तरीक़ा भी सिखाता है।

भारतीय संस्कृति विश्व की एक अनूठी विरासत है जो अनेकता में एकता के लिए जानी जाती है, जिसे विभिन्न भाषाओं, धर्मों और जातियों के संगम ने एक अद्भुत और अनुपम स्वरूप प्रदान किया है।हमारी संस्कृति केवल रीति रिवाजों का संग्रह ही नहीं बल्कि संपूर्ण जीवन का दर्शन है, जो सत्य धर्म और शांति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।भारतीय संस्कृति मुख्य रूप से भौतिकवादी न होकर आध्यात्मिक है। वेदों, उपनिषदों और भगवद्गीता में निहित दर्शन ने न केवल भारत को बल्कि समूचे विश्व को मोक्ष का रास्ता दिखाया है। योग और ध्यान भारत के आध्यात्मिक चिंतन की देन है।भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित रामायण और महाभारत जैसा साहित्य भारतीय आध्यात्मिकता का साक्षी है।अजंता एलोरा की गुफाएँ और ताजमहल भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। दया,करूणा,क्षमा,प्रेम,सहिष्णुता जैसे नैतिक गुण हमें संस्कृति से ही मिलते हैं जो भारतीय शिक्षा का आधार हैं।इन गुणों से हमें बेहतर इंसान बनने और समाज में सकारात्मक भूमिका निभाने की प्रेरणा मिलती है।

भारतीय संस्कृति, मानवता और आध्यात्मिकता का बेजोड़ मिश्रण है जिससे समूची मानव जाति लाभान्वित हो सकती है।

भारतीय संस्कृति कुछ आधारभूत मूल्यों पर आधारित है जैसे- वसुधैव कुटुंम्बकम् - पूरे विश्व को एक परिवार मानना।

अतिथि देवो भवः - अतिथि को देवता समान मानना।

कर्म प्रधानता - कर्म को महत्व देना।

सहिष्णुता - सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव रखना।

भारतीय संस्कृति कला, योग, विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र में दुनिया को अपना बहुमूल्य योगदान देती रही है।संस्कृति की नींव पर टिके मानव समाज का परम कर्तव्य है कि वह अपनी संस्कृति का संरक्षण करने में अपना योगदान भी दे और संस्कृति की विरासत को अगली पीढ़ी में हस्तांतरित भी करे, क्योंकि एक समृद्ध संस्कृति ही एक उन्नत राष्ट्र का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होती है।

–नई दिल्ली

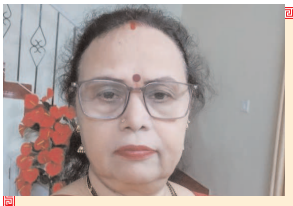

पुस्तकें ही जीवन

कवयित्री
शशिप्रभा शाक्य 'शशि'
भोपाल

पुस्तकें हमारी अनमोल धरोहर, रचती सदा ही नव निर्माण।
इनको साथ रखोगे तो फिर, पूर्ण हो जाए जगत कल्याण।

पुस्तकों से क्यों भाग रहे हो,
यह सब की सच्ची साथी हैं ।
डिजिटल पर क्यों आश्रित हो?
यह सच्चे ज्ञान की साथी हैं ।
साहित्य जगत के विद्वानों ने,
क्या ऐसे ही साहित्य रच डाला?
संपूर्ण ज्ञान इनसे मिल जाए,
पुस्तकें हैं ज्योतित ज्ञानमाला।
पुस्तक पढ़ने से ही तुमको,
ज्ञान सही मिल सकता है।
जैसे सागर के रत्नों से,
मोती निकाला जा सकता है।
साहित्य की हर एक विधा में,
रूप अनेक मिल जाते हैं ।
हर राही को राह दिखाते,
मार्ग प्रशस्त कर जाते हैं ।

यह इतना विशाल सागर है,
जितनी डुबकी लगाओगे ।
हर डुबकी में नित्य नया तुम,
नए रूप में पा जाओगे ।
ज्ञान का विशाल भंडार यहाँ है,
इतने रत्न कहीं और नहीं ।
यह पुस्तकें अनमोल नगीने,
जिसका कोई ओर- छोर नहीं ।
साहित्य जगत सबका हित करता,
पुस्तक उसकी संपूर्ण इकाई है ।
इनसे जुड़कर तो तुम देखो,
इसमें तुम सबकी भलाई है ।
पुस्तकें ही अनमोल धरोहर,
और यह इनका उपकार है ।
पढ़कर जीवन सँवारो अपना,
यह हमें पावन उपहार है।

मानवता की पाठशाला है पुस्तक संस्कृति

सुनीता शर्मा 'सिद्धि'

आज मानव जीवन भौतिकतावदी आडम्बर में लिप्त मनोवृत्तियों के कारण विचलित एवं व्यथित है। धन, मान, सम्मान प्राप्त करने की लालसा में अधिकांशतः मनुष्यों, व्यापारियों, संस्थाओं, कम्पनियों आदि पर अनैतिकता की जमीं कालिख से परिवार, समाज, राष्ट्र के प्रति मानवीय भावनाओं, सम्वेदनाओं में जो कमी आई है उसने मनुष्य को न केवल सुविधाहीन किया है अपितु उसे नाना प्रकार की पीड़ाओं, चिन्ताओं और परेशानियों में डाल दिया है।

संसार में ढेरों सुख साधन होने के बावजूद भी आज मनुष्य के मन में भय, बेबसी, दीनता और बेचैनी की आग सुलगती नजर आती है। इन संकटों से दूर रखने का सबसे उत्तम उपाय है भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति से जुड़ना। भारत के आध्यामिकता की वह संजीवनी बूटी है जो परेशानी रूपी तम से घिरे मानव जीवन को अपने नूतन प्रकाश से आलोकित कर सकती है।

भारतीय पुस्तकों में दर्ज विश्व में विख्यात भारतीय आध्यात्म की यह विशेषता रही है कि वह परिवार, समाज, राष्ट्र और पूरे विश्व को एकता, समानता एवं स्वतंत्रता के मूल्यों से परिचित करा सकता है क्योंकि भारत ने किसी भी धर्म संस्कृति एवं सभ्यता का न कभी अपमान किया और न ही किसी जाति वर्ग सम्प्रदाय या क्षेत्रीयता को नुकसान पहुंचाया हैं।

भारत राष्ट्र ने पूरे विश्व के लिए सभी सुखी हो, सभी रोग मुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी भी दुःख का भागी न बनना पड़े का संदेश देकर न केवल हर संस्कृति को मान सम्मान दिया है अपितु उसे अपने ही परिवेश में शामिल भी किया है। हालांकि लम्बे समय तक गुलामी की जंजीरों से जकड़े भारत वर्ष की संस्कृति एवं आध्यात्म की श्रेष्ठता को आतताईयों ने कई बार चोट पहुंचाई जिससे वह कमजोर तो हुई पर टूटी नहीं क्योंकि भारत के आध्यात्म की नींव बहुत मजबूत रही है।

भारतीय आध्यात्म ने देश या जाति के संकीर्ण बंधन से मुक्त होकर हमेशा मानव कल्याण की कामना की है। अतः ईश्वर ने भी भारत में गणतंत्रों, राज्यों और साम्राज्यों के दर्शनों को, सृष्टि मीमांसाओं को, विज्ञान को, स्मारकों, राज्य महलों को, लोकनिर्माण कार्यों को, समुदाय, समाज कानून संहिताओं को, भौतिक विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति और प्रशासन की पद्धतियों को, अनेक पंथो को, व्यापार उद्योग के अतिरिक्त ललित हस्तकलाओं को, सांस्कृतिक कलाओं में, नृत्य संगीत वाद्य, गायन आदि को, तनमन को स्वस्थ रखने हेतु यौगिक प्रणालियों को, आध्यात्मिक कलाओं में शास्त्र, वेद, पुराण, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत आदि अनेक ग्रंथों को, धार्मिक व्यवस्थाओं में मानवीय मूल्यों को सांसारिक कलाओं में मनुष्य के रहन-सहन, आचार-विचार आदि का ऐसा सृजन किया है जिससे भारतीय संस्कृति एवं उसके आध्यात्म का दृष्टिकोण संपूर्ण मानव के लिए हितकारी हो। भारत के अनेक समर्पित निष्ठावान ऊर्जावान राष्ट्र प्रेमी भी भारत वर्ष की उपयोगी संस्कृति एवं आध्यात्म की विचारधारा से जीवन जीने की कला का पाठ पूरे विश्व को पढ़ाते रहे हैं इसलिए यह कहना बिलकुल सत्य है कि भारतीय आध्यात्म की शक्ति जगत गुरु के पद पर आरूढ़ होने के लिए अपने कदम बड़ा चुकी है। विश्व में भारत ही वह राष्ट्र है जिसके पास विलक्षण उर्जास्थिता, जीवन और जीवन के आनन्द की असीम शक्ति एवं भरपूर सृजनशीलता विद्यमान है। भारतीय आध्यात्म की यह विशेषता है कि वह भारतवर्ष के ऋषि, मुनियों की पावन आध्यात्मिक विचारधारा का शंखनाद पूरे विश्व में शान्ति साहस और सामर्थ्य के साथ करता रहा है। अतः भारतीय आध्वयात्म न केवल विश्व संस्कृति का मूलभूत आधार है अपितु विश्व की भावी एकता की भूमिका भारत की आध्यात्मिक संस्कृति में ही निहित है।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में मैं अपने मानव चक्षु से भावी भारत की उस पूर्णावस्था को देखता हूँ जिसमें इस विप्लव और संघर्ष से तेजस्वी और अजय भारत का उत्थान

होगा। फिर से कालचक्र घूमकर आ रहा है एक बार फिर भारत से ही वही सांस्कृतिक शक्ति का प्रभाव निस्सृत हो रहा है जो शीघ्र ही समस्त विश्व को आप्लावित कर देगा। उनका पौरुष हुंकार भरता है। विश्वास रखो, विश्वास रखों, प्रभु की आज्ञा है कि भारतीय संस्कृति ही विश्व को एक नई दिशा एवं नया मार्गदर्शन प्रदान करेगी। भारतीय आध्यात्म मिश्रित संस्कृति का पुर्नरूत्थान एवं पुनरोदय अवश्य होगा।

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता का समावेश होने से मानव जीवन में जो कोमल भावनायें, संवेदनायें विकसित होंगी उससे मनुष्य अपनी उपलब्धियों के साथ न केवल उत्कर्ष और उन्नति की ओर पहुँचेगे अपितु सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय के मार्ग पर भी अग्रसर होंगे। भारतीय आध्यात्म के विकास के मूल में छिपा है जीवन के प्रति आस्था, उत्साह, निष्कर्म कर्म, परिश्रम एवं ईश्वर में गहरी आस्था जो मनुष्य को घृणा, क्रोध, चिन्ता, ईर्ष्या, असंतोष आदि व्याधियों से दूर रखकर उसे सुखी चरित्रवान बना सकती हैं। वेदों में उपजी भारत की आध्यात्मिक संस्कृति विश्व संस्कृति के रूप में प्रतिष्ठित होकर बिखराव, अलगाववाद, अशान्ति और आतंकवाद के शूलों से पीड़ित मानव समुदाय को आदर्शवादी सृजनात्मक गंतव्य की ओर ले जाने में पूरी तरह सक्षम है। अतः यह कहना बिलकुल सत्य है कि भारतीय संस्कृति के साथ आध्यात्म का उत्थान जड़ एवं पाषणीय शक्ति या विनाश की ध्वजा से नही अपितु प्रेम, शान्ति, सद्भाव एवं मानव मूल्यों की ध्वजा से होगा। वैदिक ऋचाओं, मंत्रों का अवतरण जिस भारत राष्ट्र की भूमि पर हुआ आज वही राष्ट्र भारत लगातार प्रगति पथ पर अग्रसर होकर निश्चित ही मानव जाति का आध्यात्मिकरण करेगा। मनुष्य में देवत्व की वृद्धि और धरती पर स्वर्ग का आगमन भारतीय आध्यात्मिक समाजवाद में मौजूद है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि भविष्य में भारत की आध्यात्मिकता विश्व बन्धुत्व की कामना लिये विश्व पर हावी होकर एक नये विश्व का सृजन करके मानवीय मूल्यों को विकसित करने में अवश्य ही सफल होगा।

भारत आध्यात्म की, ज्योति लेकर विश्व शान्ति के, दीप जलाता।
वो मानवता का पाठ पढ़ाकर तनमन में उत्साह जगाता।

-भोपाल

पुस्तकों का महत्व

प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे

पुस्तकों को पढ़ने से अविश्वसनीय आनन्द और शांति का अहसास होता है। पुस्तकें विभिन्न प्रकार के जानकारी को संग्रहित करके रखती हैं। पुस्तकें हमें ज्ञान देती हैं,विवेक व चिंतन देती हैं,तथा सद् राह दिखाती हैं।पुस्तकों से ही हमें अपने अतीत व संस्कृति का ज्ञान होता है,तथा हमारे अंतर्मन में एक नवीन चेतना का संचार होता है।

हमें बस अपने दैनिक जीवन में पुस्तकों को पढ़कर उनमे संग्रहित लाभकारी जानकारी को समझना और उसे अपने जीवन मे उतारने की आवश्यकता है। कई पुस्तकों में महान व्यक्तियों के व्यक्तिगत इतिहास होते हैं जो हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। जीवन के विभिन्न चरणों में पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी सहायक होती हैं।किताबें हमारे दिन-प्रतिदिन के अस्तित्व में सबसे अच्छी दोस्त हैं। उन्होंने हमें कभी अकेले नही रहने दिया और हमारे सबसे करीबी साथी के समान बनी रही। जब भी हमें उनकी आवश्यकता होती है, वे हमारे लिए उपलब्ध होती हैं। किताबें हमें अपने सामान्य परिवेश को समझने और अच्छे और बुरे के बीच भेद करने में मदद करती हैं। वे हमारी आदर्श सहयोगी और प्रशिक्षक हैं।किताबों को समझकर हम कुछ अच्छी बातें अपने जीवन मे उतारकरऔर बेहतर बनते हैं। वे हमारे उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती हैं और साथ ही उन्हें हासिल करने में पूरा सहयोग करती हैं। हममें से एक बड़ी संख्या में लोग अपने अतिरिक्त समय में पुस्तक पढ़ते है क्योंकि पढ़ने से मानसिक दबाव को कम करने में मदद मिलती है।

यह हमें एक काल्पनिक दुनिया में ले जाती है और पढ़ने के बाद हम बहुत अच्छा महसूस करते हैं। पुस्तकें हमारी अंतर्दृष्टि और कल्पनाशक्ति को उन्नत करने में हमारी सहायता करती है।विद्यार्थी जीवन को संघर्षों से भरा हुआ और ज्ञान प्राप्त करने के लिए समर्पित जीवन माना जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी को पुस्तकों को समझने की प्रवृत्ति सिखानी चाहिए। चूंकि छात्र जीवन में किसी व्यक्ति का निर्माण होता हैं। अतः उन्हें अपने माता-पिता, शिक्षकों और बुजुर्गों द्वारा किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।किताबों के साथ मित्रता करना उनके लिए सबसे आदर्श तरीका है। ऐसी कई पुस्तकें हैं जिनमें कुछ अविश्वसनीय चरित्रों का जीवन विवरण हैं। ये पुस्तकें उन व्यक्तियों के अस्तित्व के इतिहास से प्रेरित होने में विद्यार्थियों की सहायता कर सकती हैं। इनका वे सम्मान करते हैं और इनसे प्रेरित होकर अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यकतानुसार काम करते हैं। पढ़ने से एकाग्रता और ध्यान में सुधार होता है जो आमतौर पर एक छात्र के जीवन में आवश्यक है।

-मंडला,मप्र

अतीत के परिप्रेक्ष्य में चारों वेदों का सार्थक विवेचन

प्रेमलता भार्गव

वेदों का हिन्दू धर्म में अत्यधिक महत्व है। ये हिन्दू धर्म के प्राचीनतम तथा आधारभूत धर्म ग्रंथ हैं। धार्मिक मान्यता है कि सर्वप्रथम वेदों का ज्ञान ब्रह्मा जी को प्राप्त हुआ था। फिर उन्होंने यह ज्ञान ऋषियों तथा सृष्टि के आदि पुरुष मनु को प्रदान किया। इसके पश्चात वेदों का यह ज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा के द्वारा आगे बढ़ा। वेदों के ज्ञान को श्रुति भी कहा जाता है क्योंकि यह ज्ञान ब्रह्मा जी द्वारा ऋषियों को सुनाया गया माना जाता है।वेद ज्ञान का भंडार हैं क्योंकि इनमें ब्रह्म, देवता, ब्रम्हांड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, भूगोल, खगोल,, धार्मिक नियम तथा रीति रिवाजों जैसे विषयों का ज्ञान है।

वेदों के विषय में एक प्राचीन धार्मिक कथा प्रचलित है। जिसके अनुसार वेदों को मधु-कैटभ नामक दो दैत्यों ने ब्रम्ह लोक से चुराकर समुद्र में छुपा दिया था। वेदों की चोरी होने पर ब्रम्हा जी बहुत दुखी हुए तथा उन्होंने विष्णु भगवान से वेदों को खोजने में सहायता मांगी। तब विष्णु भगवान ने हयग्रीव के रूप में अवतार लेकर मधु- कैटभ का वध किया तथा वेदों को ढूंढकर उन्हें ब्रम्हा जी को सौंप दिया। वेदों की उपयोगिता धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, तथा वैज्ञानिक सभी क्षेत्रों में है। ये जीवन शैली, समाज कल्याण, आध्यात्मिक विकास, भौतिक लाभ तथा सृष्टि के रहस्यों को उजागर करते हैं। वेदों को मानव सभ्यता के आदि ग्रंथों में माना जाता है। ये हिन्दू समाज की नींव हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि पहले वेदों का ज्ञान मौखिक रूप में दिया जाता था फिर द्वापर युग में महर्षि वेदव्यास ने इस ज्ञान को लिपिबद्ध किया।

वेदों की संख्या चार है। जिनके नाम हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। अग्रिम पंक्तियों में हम सविस्तार इन चारों वेदों पर चर्चा करेंगे।

ऋग्वेद - ऋग्वेद का अर्थ है - स्तुतियों या स्तोत्रों का ज्ञान।यह वेद चारों वेदों में सबसे प्राचीन तथा महत्वपूर्ण वेद है। इसमें देवताओं की स्तुति में ऋचाएं या श्लोक हैं जो कविता तथा छंद के रूप में वर्णित हैं। इसमें लगभग ग्यारह हजार मंत्र हैं। इसमें अग्नि, सूर्य, इंद्र आदि देवताओं की स्तुतियां हैं।

यजुर्वेद - यजुष शब्द का अर्थ होता है - यज्ञ तथा इस वेद का नाम इसी यजुष शब्द से बना है इसलिए इसका अर्थ यज्ञ हुआ। इसमें यज्ञों को करने की विस्तृत क्रियाओं का वर्णन है। इसमें मंत्रों तथा अनुष्ठानों को करने की विधियां भी सम्मिलित हैं। यह दूसरा वेद है।

सामवेद - यह तीसरा वेद है। साम का अर्थ है - गान।इस वेद में अनेक मंत्रों का संकलन है जिन्हें देवताओं की पूजा के समय गाया जाता है इस वेद को संगीत तथा भक्ति से परिपूर्ण माना जाता है।

अथर्ववेद - यह चौथा वेद है। इस वेद में जीवन के व्यावहारिक पहलुओं, जैसे विवाह, जादू - टोना, तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा से संबंधित जानकारी है। इसके अतिरिक्त इस वेद में राजनीति, राष्ट्रीय तथा सामाजिक सामंजस्य जैसे विषयों का भी समावेश है।

यह था चारों वेदों का विवेचन। संक्षेप में वेद न केवल धार्मिक ज्ञान का स्त्रोत हैं बल्कि वेदों का अध्ययन आज भी प्रासंगिक हैं। क्योंकि वेदों का अध्ययन जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक ज्ञान तथा मार्गदर्शन प्रदान करता है।

-सिरोंज, मध्यप्रदेश

जीवन का शाश्वत संगीत है पुस्तक संस्कृति

डॉ.यशोधरा भटनागर

मनुष्य ने जब पहली बार मिट्टी की तख्तियों पर, ताड़पत्रों पर और भोजपत्र पर शब्द उकेरे होंगे, तब शायद उसे अंदाज़ा भी न रहा होगा कि यही शब्द आने वाली पीढ़ियों के लिए अमर दीपक बन जाएँगे। पुस्तकें केवल कागज़ पर छपे अक्षर नहीं, बल्कि युगों की चेतना और अनुभव का अनवरत प्रवाह हैं। यही प्रवाह पुस्तक संस्कृति कहलाता है।

पुस्तक मौन शिक्षक, सच्ची साथी-

किताबें बोलती नहीं, पर उनका मौन ही सबसे गहन संवाद होता है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था-

पुस्तकें हमारी उस मित्र की तरह हैं,
जो हमें तब भी नहीं छोड़तीं,
जब सारी दुनिया हमारा साथ छोड़ देती है।
पुस्तक संस्कृति वही है जो जीवन की
कठिन राहों में दीप बनकर हमें थामे रहती है।

भारतीय परंपरा और पुस्तक संस्कृति-

भारत में पुस्तकों की परंपरा सदियों पुरानी है। वेद और उपनिषद मौखिक परंपरा से लिखित ग्रंथों में बदले, तो यह संस्कृति और गहरी हो गई। रामायण और महाभारत ने न केवल कथा दी, बल्कि जीवन-दर्शन भी सौंपा। गुरुकुलों में ताड़पत्रों पर लिखे श्लोक, मंदिरों के पुस्तकालयों में सुरक्षित पांडुलिपियाँ, और नालंदा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय इस बात का प्रमाण हैं कि भारत की आत्मा पुस्तकों में ही बसती है।

विद्या ददाति विनयं यह केवल श्लोकांश नहीं, बल्कि पुस्तक संस्कृति का मूल मंत्र है।

बदलते समय की चुनौतियाँ-

आज की पीढ़ी तेज़ रफ्तार सूचना-युग में जी रही है। मोबाइल की स्क्रीन पर पल भर में लाखों शब्द उपलब्ध हैं, परंतु उनमें वह गहराई, वह आत्मीयता कहाँ, जो कागज़ की खुशबू से आती है?

सोशल मीडिया ने पढ़ने की आदत को सतही बना दिया है। पाठक अब जानकारी तो चाहते हैं, पर ज्ञान से दूरी बना रहे हैं। यह पुस्तक संस्कृति के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। लेकिन आशा का द्वार बंद नहीं है। ई-पुस्तकें और डिजिटल लाइब्रेरीज़ आज उस गाँव तक पहुँची हैं, जहाँ कभी किताब देखना भी दुर्लभ था। स्वरूप बदला है, पर पुस्तक संस्कृति का मूल सार आज भी अक्षुण्ण है।

समाज और पुस्तक संस्कृति-

जहाँ पुस्तकालयों की रौनक होती है, वहाँ विचारों का आदान-प्रदान होता है, संवेदनाओं की सरिता बहती है और समाज में सहिष्णुता की जड़ें गहरी होती हैं। बचपन में कहानी की किताबें बच्चे की कल्पना को उड़ान देती हैं, युवावस्था में साहित्य उसके व्यक्तित्व को दिशा देता है और वृद्धावस्था में पुस्तकें अकेलेपन की सच्ची साथी बन जाती हैं।

एक पुस्तकालय से निकलने वाला पाठक अकेला पाठक नहीं होता,वह अपने साथ संस्कृति, सभ्यता और समाज का भविष्य लेकर निकलता है।

समाधान की राह-

१. घर-घर पुस्तकालय- हर परिवार में कम से कम एक छोटी लाइब्रेरी बने।

२. विद्यालयों में पठन संस्कृति- बच्चों को कहानियों और साहित्य से जोड़ना अनिवार्य हो।

३. पुस्तक मेले और पाठक मंच- किताबों को उत्सव बनाना।

पुस्तक संस्कृति केवल पढ़ने की आदत नहीं, बल्कि एक जीवन-दृष्टि है। यह संस्कृति हमें विवेकशील, संवेदनशील और संस्कारित बनाती है। भले ही समय बदले, तकनीक बदले, पर किताबों का महत्व कभी कम नहीं हो सकता।क्योंकि अंततःपुस्तकें ही वह दीपक हैं जो अंधेरे में भी मनुष्य के भीतर प्रकाश जगाए रखती हैं।

-देवास

पुस्तक संस्कृति

कवि
कृष्णदेव चतुर्वेदी

पुस्तक प्रथम गणेश की, रामायण का ज्ञान।
पुस्तक पावन वेद है, शब्द शब्द सम्मान।।1
पुस्तक में संसार छुपा, पुस्तक में भगवान।
पुस्तक गीता कृष्ण-पथ, पुस्तक ग्रंथ महान।।2
पुस्तक की महिमा बड़ी, पढ़ते श्रेष्ठ महान।
बच्चे पढ़ते खासकर, लिए नैन मुस्कान।।3
पुस्तक ही इतिहास है, पुस्तक ज्योतिष भाल।
पुस्तक में भूगोल है, चंदा सूरज चाल।।4
पुस्तक में जीवन छुपा, पुस्तक में आदर्श।
पुस्तक अर्वाचीन है, पुस्तक नव उत्कर्ष।।5
पुस्तक में है लिपियां, शैली का भंडार।
पुस्तक में अधिकार है, पुस्तक में व्यवहार।।6
पुस्तक में संविधान है, पुस्तक में कानून।
पुस्तक में उत्साह है, जीवन का मजमून।।7
पुस्तक से गूगल बना, गूगल में संसार।
अब तो गूगल कर रहा, पुस्तक सा व्यवहार।।8
पुस्तक फूलों सी सजी , अलमारी में बंद।
भाता अब पढ़ना नहीं, ज्यौ भूषण के छंद।।9
पुस्तक में ही आदमी, पुस्तक में यह देव।
पुस्तक में नक्शें सभी, पर्वत पानी रेव।।10

भोपाल

नागरिक बोध की मिसालों का अभाव

मनोरमा पंत

आज का भारत विकसित देशों की होड़ में अग्रसर है । समय के साथ-साथ नागरिकों की जीवन स्तर भी बढ़ा है और साथ ही बढ़ी है क्रय शक्ति । क्रय शक्ति में वृद्धि के बावजूद नागरिकों का पुस्तकों के प्रति आकर्षण कम हो रहा है। पहले लोग सड़क किनारे लगी दुकानों से ही पुस्तकें खरीद कर पढ़ते थे और पुस्तकालयों में भी उनका जमावड़ा रहता था। यह नागरिक बोध में कमी दर्शाता है।

आजकल लोगों की रूचि वाहनों में ज्यादा है जो कम ब्याज पर किस्तों में वाहन मिलने लगे हैं । अत: स्कूटर, मोटर साइकिल जैसे वाहन आम आदमी की जद में आ गये हैं। अब मध्यवर्गीय आदमी भी कार रखने की हैसियत रखने लगा है जिसके फलस्वरूप सड़कों पर वाहन की भीड़ बढ़ती जा रही है। ये सब बातें प्रशंसनीय है पर परेशानी की बात यह है कि शहरों की हर सड़क पर वाहनों की भीड़ बढती जा रही है । घंटो ट्रेफिक जाम रहता है ।

अभी भारत में भारी बारिश हो रही है, टूटी सड़कों और कीचड़ तथा भारी ट्रेफिक जाम से आमजन त्रस्त है। मिनटों के सफर में घंटों लग जाते हैं, गम्भीर अवस्था में पहुँचे मरीज इस जाम में फँसने की वहज भी अपनी जान भी गवा सकते हैं जैसा कि इन्दौर में हुआ। जाम में फंसते ही हम चिड़चिड़ा जाते हैं, झल्लाने पर इस जाम से छुटकारा पाने की पहल नहीं करते।करें कैसे हममें नागरिक बोध है ही नहीं । आइये, नागरिक बोध के उदाहरण पहले पढ़े फिर आत्ममंथन करें।

मिजोरम के आइजोल में नो हार्न (४ सितम्बर २०२५) की बड़ी खबर आश्चर्यजनक तो लगी पर साथ में कौतूहल भी बराबर रहा है कि सड़कों पर बिना किसी चिन्ह या चौराहों के ,लोग लम्बी कतारों में अपनी बारी का इंतजार करते है। वे हार्न नहीं बजाते, वे अपना धैर्य नहीं खोते ।इसका एकमात्र कारण है नागरिक कर्तव्य का भाव। इसी नागरिक बोध के कारण वहाँ की संस्कृति में मृदुता, शांति एवं सहयोग की भावना का रंग धुला है।

आप दुनिया के किसी भी पश्चिम देश में चले जाए, नागरिक बोध वहाँ अवश्य दिखेगा। यातायात के नियमों का पालन सहज भाव में पालन करते लोग दिखेंगे। रेलवे स्टेशन पर कतार में लगे लोग बूढ़े, अपाहिज लोगों की सहायता करते लोग हम भारतीय का ध्यान आकर्षित कर जाते हैं। इसके विपरीत हमारे देश में हर जगह धक्का मुक्की एवं अव्यवस्था का माहौल दिखाई देगा।भोपाल में यातायात नियमों के उल्लंघन में एक ही दिन में ७७ हजार रुपए की वसूली की गई ।

धार्मिक स्थलों पर जमी भारी भीड़ में हमेशा ही अराजकता फैलने से मची भगदड़ में लोग मरते रहते हैं, कुचलते रहते हैं।यह स्थिति भीड़ प्रबंधन की असफलता या अव्यस्था से तो होती है ,पर साथ ही अफवाहों के कारण भी भगदड़ में लोग,घायल हो जाते हैं या मर जाते हैं। महाकुंभ में मची भगदड़ में कुचल कर मरे लोगों को हम भूल नहीं सकते। इसी प्रकार ४-जून को बंगलुरू में आइपीएल में रायल चैलेजर्स का विजय जुलूस का जश्न मातम में बदल गया। भारी भीड़ अव्यवस्था और सुरक्षा के अभाव में तीन लोग मारे गये। मध्यप्रदेश के सीहोर में कुबेरश्वर धाम में अनेकानेक घायल हुए और दो महिलाएं मारी गई। प्रति वर्ष भारत में भारी भीड़ से उत्पन्न में भगदड़ में लोग कुचलते रहते हैं, मरते रहते हैं पर उससे सबक नहीं लेते। सीधी सी बात है देश में नागरिक बोध नहीं। पीछे हैं तो आगे बढ़ने के लिये धक्का मुक्की करते हैं। लोग गिरे, कुचले कोई फर्क नहीं पड़ता।

शहरों को साफ रखने के लिये सरकारें भरसक प्रयत्न करती हैं। जगह जगह कूड़ादान रखती है। हर घर से कचरा उठवाती है, पर लोग सहयोग नहीं करते। सड़कों पर कचरा फेंकते हैं नदी, तालाबों में भी इससे अछूते नहीं है। कचरा तथ पूजन सामग्री से जल स्त्रोत प्रदूषित होते रहते हैं। पूरे शहर का गंदा पानी भोपाल के ताल में मिल रहा है।

सबै भूमि गोपाल की तर्ज पर कहीं भी अतिक्रमण किये जाते हैं। जरा जरा सी बात पर हत्याऐं होती रहती है, बलात्कार होते रहते हैं, पर हम नागरिक मौन है। हममें गलत बात का प्रतिकार करने की क्षमता नहीं है। हममें नागरिक बोध नहीं है। हम सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट करते हुए देखते हैं पर चुप रहते हैं। पेड़ों को कटते हुए देखकर भी मौन रहते है।

साम्प्रदायिकता फैलाने वाले विष भरे बोलों का विरोध नहीं करते। हम तटस्थ रहने की नीति पर अमल करते हुए अपने आप को सुरक्षित समझते हैं। तो सोचिये कैसे समाज और देश में शुचिता आएगी, कैसे कानून व्यवस्था सुचारू रूप से चलेगी। कम से कम अपने बच्चों में तो नागरिक बोध के बीज अंकुरित करे। विकसित देश की तड़क भड़क वाली संस्कृति अपनाने वाले भारत देश वहाँ के नागरिक बोध का अनुगमन भी तो करे ।

एक प्रमुख समाचार पत्र में ७ सितम्बर को प्रकाशित सीएसई की रिपोर्ट के अनुसार करोड़ों खर्च होने के बाद भी मध्यप्रदेश की प्रमुख नदियाँ दम तोड़ रही है। दुख की बात है कि जिनमें पतितपावनी नर्मदा जैसी जीवन रेखा भी है। सर्वे बतलाते हैं कि उसमें २२ लाख लोगों का सीवेज घुल रहा है। इसका पानी सिर्फ जंगली जानवरों के लिये उपयुक्त माना गया है। बिना शुद्धिकरण किया गया सीवेज, अवैध खनन, कृषि में इस्तेमाल हो रहे रसायन मुख्य कारण है, जिनसे नदियों का पानी नहाने योग्य भी नहीं रहा। नदियों के प्रदूषण में धार्मिक आस्था भी भारी पड़ती है। प्रतिमाओं का ,फूल पत्तियों का विर्सजन/शवों का नदियों में बहाना अब बहुत भारी पड़ रहा है। जापान में बाढ़ग्रस्त सड़कों पर बहने वाला पानी भी काँच के समान साफ रहता है । कारण है नागरिक बोध ।पानी को साफ रखना वहाँ के नागरिक नैतिक जिम्मेदारी मानते हैं ।याद रखे नागरिक बोध के अभाव में हम विकसित देशों से पीछे ही रहेगे ।इसके लिए जरूरी स्वप्रेरणा और देश के प्रति प्रेम।

–भोपाल

कर्म निष्ठा एवं सतत श्रम के उपासक बाबा संत पुणवंत जी

लेखक/सुभाष गीद

अक्टूबर २०२५ में निर्दलीय प्रकाशन भोपाल/नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'गुरु कृपा' गुरु संत पूर्वांत बाबा को समर्पित है। हम सब जानते हैं कि भारत संत और महात्माओं की कर्मस्थली आदिकाल से रही है इस परंपरा का निर्वहन प्रत्येक प्रत्येक क्षेत्र के उपासक विद्वान संत महात्माओं द्वारा समय-समय पर किया जाता रहा है।

भारत में काल एवं समय की परिस्थितियों के अनुसार कई सिद्ध पुरुष और नाथ जोगी बैरागी के रूप में अवतरित होते रहे हैं जिनके साधना एवं कठोरता की कहानी गाहे बगाहे प्रत्येक धार्मिक स्थल मंदिर मठ यहां तक कि छोटी-छोटी मडिया की भी अपनी एक कहानी प्रचलित है। यह सत्य है कि ऐसे सिद्ध पुरुष जीविका पार्जन हेतु समाज पर आश्रित ना रहकर स्वयं के द्वारा उपार्जित आहार के सहारे समाज में एक विशिष्ट स्थान बनाकर समाज को ऊर्जावान बनाते रहे हैं। ऐसे ही सिद्ध महात्माओं में एक नाम गुरु संत पूर्ण बाबा ताप्ती नदी के किनारे बसे मुलताई कस्बे की भी है जो एक तीर्थ स्थल के रूप में विख्यात है।

यह तीर्थ वर्तमान में अपने आसपास रहने वाले ग्राम वीडियो में बहुत लोकप्रिय हुए तो बाहरी आगंतुकों के लिए भी उतना ही

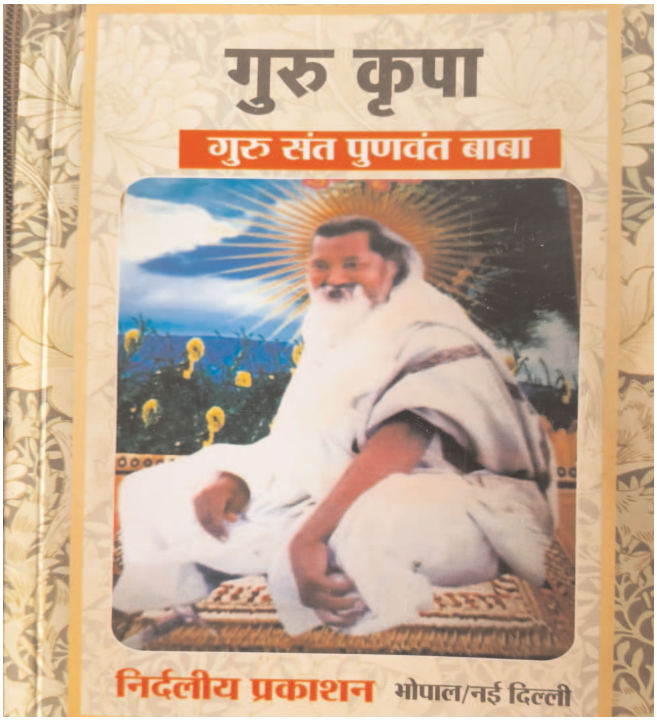

महत्वपूर्ण एवं जिज्ञासा का विषय रहे हैं जिनके बारे में लोग यात्रा द्वारा जानकारियां प्राप्त करते हैं तथा उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर अपनी खोयी हुई ऊर्जा पुनः प्राप्त करते हैं। कहां गया है कि-

त्रिभा सारस्वतं तोयं, साप्ताहेन तुयामुनयम्।
सदस्यः पुनाति गांगेयं, दर्शनादेव नर्मदम्।।

अर्थात सरस्वती का जल तीन दिनों में यमुना का जल ७ दिनों में और गंगा का जल तुरंत पवित्र करता है परंतु नर्मदा जल प्राणियों को दर्शन मात्र से ही पवित्र कर देता है। यह कथन बाबा पुणवंत जी के चरित्र पर स्पष्ट चरितार्थ दिखाई पड़ता है।

हम जानते हैं कि सनातन की परंपरा में पावनता का महत्व सर्वाधिक उत्कृष्ट माना गया है उसे पवन परमात्मा का स्मरण मात्र से ही मन में शांति का प्रकाश उत्सर्जित होता है। बाबा पुणवंत ने भी इस परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए विधिवत गुरु दीक्षा ली थी और गुरु परंपरा को समर्थन करते हुए भक्तों में ज्ञान का प्रकाश दीप प्रज्वलित करते रहे हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं-

गुरु न स्यात, स्वजनों न स्यात।
पता न स्यात, जननी न स्यात।।
दैवं न तत्स सस्यात।
न मोचयत यह समुकेत मृत्युम्।।

वह गुरु नहीं है, वह स्वजन नहीं है, वह पिता माता अभिभावक भी नहीं है, जो मृत्यु के भय से मुक्त न कर सके अर्थात जो मृत्यु भय से मुक्त कर सकता है वही सच्चा गुरु पिता माता बल्कि देव के समान है।

बाबा पुणवंत जी के सानिध्य प्राप्त करने वाला हर भक्त इस ऊर्जा से पल्लवित दिखाई पड़ता है। वह अपने इस ऊर्जा से अपने घर परिवार एवं समाज में इस ऊर्जा को प्रसारित भी करता है तथा मानव होने का आनंद प्राप्त करता है। बाबा पुणवंत जी की इसी ऊर्जावान शक्ति के कारण आज इनके धर्मस्थल पर कर्म की महत्ता का आशीर्वचन छाया हुआ दिखाई पड़ता है। यहां वर्ष भर भक्तों का आवागमन चलता है तो समय-समय पर निर्धारित अवधि में भक्तों के लिए भंडारा, ज्ञान यज्ञ एवं प्रसाद वितरण के कार्यक्रम चलते रहते हैं। हमें आशा है कि वर्तमान आपाधापी के दौर में बाबा पुणवंत जी के बताए सूत्रों पर चलकर समाज में शांति एवं कर्मवादिता की पुनर्स्थापना में क्रांतिकारी रूप से सफलता प्राप्त होगी। जय बाबा पुणवंत।।

-समीक्षक/कृष्णदेव चतुर्वेदी, भोपाल

जयप्रकाश : परिवर्तन की वैचारिकी पुस्तक लोकार्पित

प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक और लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय संरक्षक श्री रघु ठाकुर ने गांधी भवन भोपाल में समाजवादी विचारक श्री शिवदयाल की पुस्तक 'जयप्रकाश परिवर्तन की वैचारिकी' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए कहा कि आज गांधी, विनोबा और लोहिया के साथ जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति के स्वप्न को साकार किए जाने की आवश्यकता है।

श्री ठाकुर ने कहा कि डॉ. राम मनोहर लोहिया ने सप्त क्रांति विषयक जो विचार देश के नागरिकों के सामने रखा था उसे श्री जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति के माध्यम से आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा कि गांधीजी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी विनोबा भावे के साथ मिलकर श्री जयप्रकाश नारायण ने देश का मागर्दशन किया। आगे चलकर उन्होंने सभी विपक्षी दलों को एकजुट कर कांग्रेस के शासन से देश को छुटकारा दिलाया। इस अभियान के अंतर्गत उन्हें सत्तापक्ष की ओर से प्रताड़ित किया गया। देश और दुनिया की व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए जो भी व्यक्ति संघर्ष करता है उसे अपमान और प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। इसके पूर्व सप्रे संग्रहालय के संस्थापक निदेशक विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि संत विनोबा भावे ने १९६० में डाकुओं जिन्हें बाद में बागी कहा गया का समर्पण कराया था और उसके बाद १९७२ में जब चंबल घाटी के सबसे बड़ी बागी माधौ सिंह उनके समक्ष नतमस्तक हुआ तथा कहा कि घाटी के सभी बागी आत्मसमर्पण करना चाहते हैं तो विनोबा जी ने उसे जय प्रकाशजी के पास भेज दिया। जयप्रकाशजी को जब यह बताया गया कि बागी को बाबा ने भेजा है तो उन्होंने सभी बागियों का जौरा में गांधीजी की प्रतिमा के समक्ष आत्मसमर्पण कराने की दिशा में कदम उठाया। श्री श्रीधर ने कहा कि आपातकाल में समाचार माध्यमों की जो भूमिका रही उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वो कम है। अधिकांश समाचार पत्रों ने सेंसर का विरोध किया था जिनमें जनसत्ता अग्रणी रहा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता गांधी भवन न्यास के सचिव श्री दयाराम नामदेव कर रहे थे। जिस पुस्तक का लोकार्पण हुआ उसके लेखक श्री शिवदयाल चार दशकों से सृजनात्मक एवं वैचारिक लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। कार्यक्रम के उपरांत नागरिकों ने उनकी पुस्तक क्रय कर लेखक का हौसला बढ़ाया।

हिंदी-भाषा

डॉ शेषपालसिंह 'शेष'

हिंदू हिंदुस्तान में, होता है हर एक।
हिंदी वाणी है मधुर, भाषा किंतु अनेक।

हिंदी हिंदुस्तान की, भाषा दिव्य - पवित्र।
काव्य,गीत,साहित्य का, वितरित करती इत्र।

हिंदी भाषा भव्य है, व्यापक अद्भुत काव्य।
उज्ज्वल-स्वच्छ भविष्य है,महाग्रंथ संभाव्य।

हिंदी की श्री-वृद्धि में,सक्रिय भारतवर्ष।
नित्य नवल-निर्माण का, हर्षपूर्ण संघर्ष।

संस्कृत के सहयोग से, हिंदी का कल्याण।
सफल सतत होगा सदा,सधा विवेकी-बाण।

हिंदी भाषा श्रेष्ठ है, करे राष्ट्र सम्मान।
संस्कृत-पुत्री है प्रथम,हिंदी ज्ञान-निधान।

संस्कृत सिंहासन सजा, बोलें हिंदी नेक।
भाषा ज्ञान विधान है,जाग्रत करें विवेक।

हिंदी भाषा हिंद में,व्यापक स्वतः विदेश।
मधुरिम सस्वर गायकी, देती है संदेश।

हिंदी भाषा रसभरी,उत्तम-श्रेष्ठ-महान।
मधुर कंठ होते ध्वनित,गूंजे हिंदुस्तान।

हिंदुस्तान विशाल है, बहुभाषी निःशेष।
हर कोई भाषा सरस,हिंदी नेक विशेष।

-आगरा

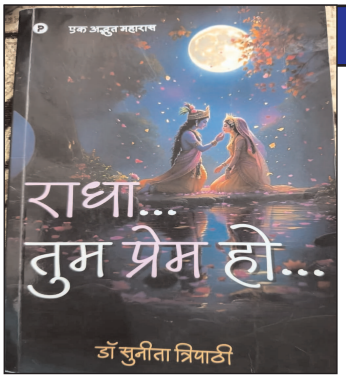

पुस्तक केवल एक ग्रंथ नहीं, भावनाओं का अभिषेक है

लेखिका/समीक्षक-डॉ. सुनीता त्रिपाठी

'राधा, तुम प्रेम हो' केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि भावनाओं का वह अभिषेक है जिसमें राधाङ्गकृष्ण के दिव्य प्रेम की अनुगूँज पूरे विस्तार के साथ सुनाई देती है। यह पुस्तक पाठक को केवल कथा नहीं सुनाती, बल्कि प्रेम के तत्वज्ञान से साक्षात्कार कराती है — जहाँ प्रेम देह नहीं, आत्मा का उत्सव बन जाता है।

लेखिका ने इस कृति में राधा के त्याग, उनकी मौन वेदना, और कृष्ण के विराट भावलोक को जिस कोमलता से शब्द दिए हैं, वह अत्यंत मार्मिक है। विशेष रूप से महारास के प्रसंग में गोपियों के साथ राधा की उपस्थिति का वर्णन केवल लीलात्मक नहीं, बल्कि दार्शनिक भी है — जहाँ राधा अहंकार का विसर्जन और प्रेम का पूर्ण समर्पण बन जाती हैं।

पुस्तक का सबसे बड़ा सौंदर्य यह है कि यह परंपरा और आधुनिक संवेदना के बीच एक सेतु का कार्य करती है। इसमें राधा केवल एक पौराणिक नायिका नहीं, बल्कि अनंत काल की स्त्री के रूप में उभरती हैं — जो प्रेम करती है, प्रतीक्षा करती है, और अंततः स्वयं प्रेम बन जाती है। लेखिका की भाषा सधी हुई, भावप्रधान और सौंदर्य से संपन्न है। संवादों और वर्णनों में ऐसी सहज लय है कि पाठक स्वयं वृंदावन की गलियों, यमुना के तट और रसलीला की रात्रि में प्रवेश करता चला जाता है। कुल मिलाकर, राधा, तुम प्रेम हो एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है जो पाठक को भीतर से बदल देती है। यह पुस्तक पढ़ते-पढ़ते मन राधा के स्वर में कह उठता है —

प्रेम न कभी था, न होगा — वह तो बस राधा है, और राधा ही कृष्ण है। यह पुस्तक उन सभी के लिए अनिवार्य पाठ है जो प्रेम को केवल भावना नहीं, जीवन का धर्म मानते हैं। -लखनऊ

-निर्दलीय प्रस्तुति

लेखिका का परिचय

डॉ. सुनीता त्रिपाठी, मिर्ज़ापुर (उत्तर प्रदेश) में जन्मी एक प्रख्यात लेखिका, कवयित्री एवं अर्थशास्त्री हैं। उन्होंने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से अर्थशास्त्र में एमए और पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। साहित्य, संस्कृति, ज्योतिष और अंक शास्त्र में गहरी रुचि रखने वाली डॉ. त्रिपाठी की पुस्तकों में 'सुर्ख गुलमोहर' और 'बैकुंठ प्रेम' (कविता संग्रह) और 'राधा तुम प्रेम हो.' ...विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। साथ ही, 'महाभारत कथा सागर' और 'संघ- एक विचारधारा' जैसी पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों को सशक्त स्वर दिया है। उनकी रचनाएँ विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। उन्हें शब्द अमृत सुजन सम्मान, साहित्य रत्न सम्मान, हिंदी भाषा भार्गीय सम्मान सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कारों के अलावा आद्या नारद पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित किया गया है।

शब्द संस्कृति

जो सुना गया
वह नहीं था पूर्ण
लेकिन
शब्दों की तह में
बात कुछ ओर ही थी..।
होंठ हिलते हैं,
पर आंखों की भाषा
कुछ और..,
अभिव्यक्ति हारी
संकेतों पर किया गौर..।
एक चुप्पी
जो बोल उठी भीतर,

ध्वनि से ज़्यादा
मुखर हुआ मौन।
अनकहे संवादों ने
कह दिया सब कुछ
बिन बोले ही..।
सच कहूं तो,
मौन रहने से
टूटता नहीं है भाषा
का अनुशासन
और हो जाती है
भावों की अभिव्यक्ति
भी मुखर..।

नीता श्रीवास्तव 'श्रद्धा'
कनाड़ा

INDIA ART FESTIVAL

INDIA ART FESTIVAL
India's Contemporary Art Fair

The biggest Art Fair network since 2011

INDIA ART FESTIVAL

04-06 APRIL 2025
KINGS CROWN CONVENTION
HYDERABAD

07-09 NOV 2025
CONSTITUTION CLUB OF INDIA
NEW DELHI

12-14 DEC 2025
PALACE GROUNDS, BENGALURU

30 JAN-01 FEB 2026
NEHRU CENTRE, MUMBAI

MUMBAI ART FAIR

10-12 OCT 2025
NEHRU CENTRE, MUMBAI

+91 8976044104, 8976044107, 8976044108

indiaartfestival@gmail.com, indiaartfestival2014@gmail.com
indiaartfestival2016@gmail.com, www.indiaartfestival.com

सबसे पहले
लाइफ इंश्योरेंस

एलआईसी का
जीवन लाभ

आकर्षक लाभों के साथ जीवन बीमा सुरक्षा

पॉलिसी अवधि	प्रीमियम भुगतान अवधि
16	10
21	15
25	16

एक पार, नॉन–लिंक्ड, जीवन, व्यक्तिगत, बचत प्लान

Plan No.: 736 UIN No.: 512N304V03

- न्यूनतम मूल बीमा राशि : ₹200,000/-
- अधिकतम मूल बीमा राशि : कोई सीमा नहीं
- प्रवेश की न्यूनतम आयु : 8 वर्ष
- प्रवेश की अधिकतम आयु : पॉलिसी अवधि 25/21/16 वर्ष के लिए 50/54/59 वर्ष

अपने एजेंट/शाखा से संपर्क करें या हमारी वेबसाइट www.licindia.in पर विज़िट करें या एसएमएस करें 'आपके शहर का नाम' 56767474 पर

डाउनलोड करें एलआईसी मोबाइल ऐप LIC digital

कॉल सेन्टर सर्विस (022) 6827 6827

हमारा वॉट्सएप नं. 8976862090 कहिए 'Hi'

हमें यहाँ फॉलो करें: LIC India Forever | IRDAI Regn No.: 512

नकली फोन कॉल्स और झूठे/धोखाधड़ी पूर्ण ऑफ़र्स से सावधान रहें. आईआरडीएआई जीवन बीमा पॉलिसियों की बिक्री, बोनस घोषित करने या प्रीमियमों के निवेश जैसी गतिविधियों में संलग्न नहीं है. ऐसे फोन कॉल प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से अनुरोध है कि वे पुलिस में इसकी शिकायत दर्ज करवाएँ.

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
मध्य क्षेत्र, भोपाल
हर पल आपके साथ

LIC/P1/2024-25/18/Hin

बिक्री समापन से पूर्व अधिक जानकारी या जोखिम घटकों, नियम और शर्तों के लिए बिक्री पुस्तिका को ध्यानपूर्वक पढ़ें.

THE BEST MEDIA TO ENHANCE YOUR FOOTWEAR BUSINESS

Footbizz
Step into the Future of Footwear

SCAN THE QR CODE TO DOWNLOAD THE APP
For Apple
For Android

INDIA'S FIRST
B2B FOOTWEAR APP
THAT SOLVES EVERY
PROBLEM FACED BY
MANUFACTURERS
AND WHOLESALERS.

Combo Offer
@4000/-
DFMN + FOOTBIZZ
Get 1 Year Subscription
SOFT COPY
ALSO AVAILABLE

Book Your
Advertisement Today
& Promote Your Brand
in India & Abroad

DELHI FOOTWEAR MARKET NEWS
ESTD. 1984
Footbizz
Step into the Future of Footwear

DELHI FOOTWEAR MARKET NEWS
25, Central Market, Ashok Vihar, Phase-1, New Delhi -110052
Ph. : 011-47028361, Mob.: 9717730178, Email: dfmn22@gmail.com

RAM NIWAS & SONS
SRD STEELS (P) LTD.

SETH RAM NIWAS GUPTA
Chairman

SANJEEV GUPTA
Director

RAJEEV GUPTA
Director

DEEPAK GUPTA
Director

skgc

SHRI KRISHAN GRIT CO.
SKGC MINERALS LTD.

BRANCHES

Delhi • Mumbai • Bhopal • Bhilai • Ludhiana • Faridabad • Ahmedabad
Ghaziabad • Roorkee • Bangalore • Indore • Jaipur • Kanpur (U.P.)

Dr. Sanjeev Gupta (The Winner of)

- Global Business Icon Award - 2018
- Asia One-Global Indian of the Year 2018-19
- India's Greatest Brands 2018-19
- ARCH of Excellence Award
- Winner of National Award in 2021
- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Nov. 2020
- ISI Mark from Bureau of Indian Standard - Dec. 2020
- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Aug. 2022

स्वामी-मुद्रक-प्रकाशक-संपादक कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' द्वारा राघव भवन,गली क्र. 6/72 दयालपुर,दिल्ली 110090 से प्रकाशित,निर्दलीय प्रेस,भोपाल से मुद्रित।